संख्या=आदित्यहृदयस्तोत्र
ब्रह्मस्वरूप=ब्रह्मचारी क
स्थान=अमरोली 425
जिला=अलीगढ़ ॐ

प्रो॰ राम शर्मा ब्रह्मचारी

स्थान, अमरोली (हाल) विहार घाट

डा॰ अलीगढ़ ,, बुलन्द शहर

यू॰पी॰

T.P. SHARMA
Satoha

श्रीमङ्गलाष्टकम् (मंगलसूक्त प्रारंभ)

मंगलं भगवान्विष्णु र्मंगलं गरुडध्वजः ।।

मंगलं पुंडरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः ।। (१

मंगलं लक्ष्मणभ्राता मंगलं जानकीवरः ।
मंगलं सुन्दरी रामो मंगलं हनुमत्प्रियः (२

मंगलं परमानन्दो मंगलं परमेश्वरः ।।
मंगलं श्री पद्मनाभो मंगलं पद्मलोचनः ।। (३)

मंगलं करुणासिन्धो मंगलं विश्वपालकः ।।
मंगलं सच्चिदानंदो मंगलं नरकान्तकः ।। (४)

मंगलं सर्वदानंदो मंगलं श्री जगदीश्वरः ।।
मंगलं श्रीरमानाथो मंगलं पुरुषोत्तमः ।। (५)

मंगलं कमलाकान्तो मंगलं भक्तवत्सलः ।।
मंगलं कमलनन्दो मंगलं कमलापतिः ।। (६)

मंगलं भगवान कृष्णो मंगलं विश्वजीवनः ।।
मंगलं माधवाधीशो मंगलं धरणीधरः ।। (७)

मंगलं देवकीपुत्रो मंगलं ऽसुरमर्दनः
मंगलं मथुरानाथो मंगलं व्रजनायकः ।। (८)

मंगलं रुक्मिणीनाथो मंगलं ... गरुडप्रिय।
मंगलं लोकसांईशो मंगलं धर्मवर्द्धन॥ १६।
मंगलं सर्व धर्मज्ञो मंगलं साधुवल्लभ॥
इदं स्तोत्रं महादिव्यं महा मंगल कारकम्॥
व्यासेन कथितम्पूर्व्वं म्महा पातक नासनम्॥ १

श्री श्री गंगाधरे नयन तीसरी विशाल
भाल चंद्र मोल लट हरे न कुल पता
पवो = मुख कीमा ल भुजंग माल न
श्री कणाल से शंकर के ध्यान
त हरी कोन सी कोल को =
श्री के सिंह खाल से हेवा भभुंग
भोली लोल पावे फेल चार नाव दी

श्रीः ।

संध्योपासन-भाषाटीका ।

देवर्षिपितृतर्पण समेत ।

जिसको

डिपुटी लौचनप्रसादशर्मा की आज्ञानुसार रुडकी
धर्मसभोपदेशक पं० यमुनादत्तजीने सर्वसा-
धारण जनोंके हितार्थ निर्माण किया ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई

स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेमें

छापकर प्रसिद्धकिया ।

शके १८१९, संवत् १९५४.

मनपछितैहैं अबसरबीते (चेतवनी

दुर्लभ देह पाय प्रभुपद भजु करम बचन अस ही ते = सहसबाहु दसवदन आदि नृप वचे न काल बली ते ॥ हम२ करि धन धाम सवारे अन्त चले उठि रीते ॥ सुत बनितादि जानि स्वारथ रत ना करु नेह सबी ते = एक दिन तोइ तजे गे पामर तू न तजे अब ही ते अवनाथ हि अनुराग जागु जद त्यागु दुरासा जी ते बुझे न काम आगिनि तुलसी कहुँ बिषय भोग बहु घी ते =

मनपछतैहै अबसर बीते =

भूमिका।

आजकल कलिकालके प्रभावसे भारतवर्षीय आर्यसंतान लोग आलस्य वश होकर अपने नित्य-कर्म्मसे विमुख होरहे हैं और दिन प्रतिदिन अपने नित्यकर्मके ज्ञानसे रहित होते चले जाँयहैं और जो कोई जाननेका उत्साह भी कहताहै तो संस्कृत विधान जाननेके कारण चुपचाप रह जाताहै क्योंकि हमारे धर्मकर्म्मके सब पुस्तक संस्कृतमें हैं इस कारण मैं'रुडकी धर्म्मरक्षिणी सभाकी' प्रेरणासे अति संक्षेप करके सुगमतासे जानने लायक नित्य कर्म विधि प्रकाशित करताहूं इसमें प्रथम सबसे ऊपर मंत्र लिखेजाँयगे तिसके नीचे भाषामें विधि यानी जिस मंत्रसे जिस तरह जो कर्म करना चाहिये सो लिखी जायँगी तिसकें नीचे भाषामें मंत्रोंका अर्थ लिखाजायगा केवल ऊपर लिखे मंत्रों-को कंठस्थ करनेसे नित्यकर्मको मनुष्य सुगमतासे करसकेगा नित्य कर्मोंमें प्रथम संध्यावंदनहै इस कारण प्रथम संध्या विधि लिखी जाती है यह उद्योग केवल परोपकारके लिये है इस में जो कुछ भूल चूकहो महाशय सज्जन जन कृपाकरके क्षमाकरैं.

आपकाकृपापात्र-

पं०-यमुनादत्त.

कर्मक्रम–सूची।

१ अपने ऊपर जल छिडके
२ आचमन
३ चोटेमें गिरह
४ आचमन
५ अपने चारोंतरफ जलफेरे
६ प्राणायामके विनियोग
७ प्राणायाम
८ विनियोग
९ आचमन
१० विनियोग
११ मार्जन
१२ विनियोग
१३ शिरपर जलछोंडे
१४ विनियोग
१५ नाकके जललगाके छोडे
१६ विनियोग
१७ आचमन
१८ सूर्य्यको अर्घ्य
१९ उपस्थानविनियोगसहित
२० अंगन्यास
२१ गायत्रीका आवाहन
२२ गायत्रीका जप
२३ गायत्रीका विसर्जन

यह भी जानना चाहिये कि विनियोगका यह काम है कि हाथ में जललेकर विनियोगको पढकर छोडदे या विनियोगको खालीपढदे विनियोग मंत्रके ऋषि आदिका स्मरण करना है.

श्रीः।

अथ संध्योपासनाविधिः।

भाषाटीकासमेतः।

ॐअपवित्रःपवित्रोवासर्वावस्थांगतोपिवा।यःस्मरेत्पुंडरीकाक्षंसबाह्याभ्यंतरःशुचिः॥ॐऋतंच सत्यंचाभिद्धात्तपसोऽध्यजायत॥ततोरात्र्यजायत ततःसमुद्रोअर्णवः॥समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोअजायत अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमिषतोवशी॥सूर्य्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत्॥

पहिले अपवित्र इस मंत्रसे अपने ऊपर जल छिडके फिर आचमन करै फिर ॐकारसाहित गायत्री मंत्रसे चोटमें गिरः लगावे परंतु यहाँ इतना और समझ लेना चाहिये कि जो चोटमें पहिलेसे गिरःलगी हुई हो तो मंत्र पढनेकी या गिरह लगानेकी कुछ जरूर नहीं फिर गायत्री पढ़कर जल अपने चारोंतरफ फेरे फिर (ऋतंच) इस ऊपर लिखे मंत्रसे आचमन

मंत्रार्थ। सब तरफसे प्रकाशमान परमात्मासे (ऋतं) वेद

दिवंचपृथिवींचांतरिक्षमथो स्वः॥ॐकारस्य ब्र
ह्माऋषिर्गायत्रीछंदोऽग्निर्देवताशुक्लोवर्णः सर्वक
र्म्मारंभेविनियोगः॥ १॥सप्तव्याहृतीनांप्रजापति
ॠषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्बृहतीपंक्तित्रिष्टुप्जगत्य

करे फिर जल हाथमें लेकर प्रथम * विनियोगकं
पढे पढकर जल हाथसे छोड़ दे ऐसेही दूसरे वि

और (सत्यं) प्रधान जिसको प्रकृतिभी कहते हैं उत्प
हुआ और तिसही परमात्मासे रात्रि हुई अर्थात् प्रलय रा
हुई और तिसही परमात्मासे जलयुक्त समुद्र उत्पन्न हुआ
और जलयुक्त समुद्र उत्पन्न होनेके पीछे संवत्सर यानि
संवत्सरात्मक सम्पूर्ण काल उत्पन्न हुआ लोकोंकी रचन
करता हुआ जगत्का स्वामी सूर्य्य और चंद्रमा स्वर्ग और
पृथिवी और आकाश इन सबको पहिले कल्पके समान
रचताभया अर्थात् जैसी व्यवस्था पूर्व सृष्टिमेंथी उसी व्यव
स्थासे सबको रचे, प्रथम विनियोगका अर्थ, ॐकारका ब्रह्मा
ऋषि है गायत्री छंदहै अग्नि देवताहै शुक्ल वर्ण है समस्त कर्म्मोंके
आरंभमें विनियोग है यानि सब कर्मोंके शुरूमें ॐकारका
उच्चारण किया जाताहै सातों व्याहृतियोंके प्रजापति ऋषि

*छंदांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेंद्रविश्वेदेवा देवताअनादिष्टप्रायश्चित्तेप्राणायामेविनियोगः गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीच्छंदःसवितादेवताग्निर्मुखमुपनयनेप्राणायामेविनियोगः ॥३॥ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदागायत्रीछंदोब्रह्माग्निर्वायुः सूर्योदेवताःयजुःप्राणायामेविनियोगः४

योग मंत्रको पढकर दुबारा हाथमेंजललेकर छोडदे इसी प्रकार तीसरीबार हाथमें जल लेकर तीसरे * विनियोग मंत्रको पढकर छोड दे ऐसेही चौथी बार हाथमें जल लेकर चतुर्थ विनियोगको पढ़कर जल हाथसे छोडदे इस प्रकार चारों विनियोगोंको करके इस प्रकार * प्राणायाम करे कि पहिले पलौथी मारके बैठे आँख मूंदले मौन धारण करले फिर

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्जगती, ये छंद हैं अग्नि, वायु, आदित्य, बृहस्पति, वरुण, इंद्र, विश्वेदेवा ये देवताहैं अनादिष्टप्रायश्चित्त प्राणायाममें इनका विनियोग है २ गायत्रीका विश्वामित्र ऋषि है गायत्री छंदहै सविता देवताहै अग्नि मुख उपनयन प्राणायाममें विनियोग है शिरसः इस मंत्रका प्रजापति ऋषिहै त्रिपदा गायत्री छंद है ब्रह्मा, अग्नि वायु सूर्य्य ये देवता हैं यजुः प्राणायाममें इसका

प्राणायाममंत्रः॥ ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यं ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्यधीमहि॥ धियोयोनः प्रचोदयात्॥

दोनों बीचकी अंगुली नासिकाके बाँये नथुनेपर रखके बाँये नथुनेको दबाले और दाहिने नथुनेसे धीरे धीरे श्वास ऊपरको खींचताजाय और मनहींमन मनमें प्राणायाम मंत्रको पढताजाय इसको पूरक प्राणायाम कहते हैं इसके करते समय नील कमलके समान श्याम चतुर्भुज विष्णुमूर्ति का नाभीमें ध्यान करे तबतक श्वांस ऊपरको खींचता रहे जब तककी प्राणायामका मंत्र पूरा पढ़चुके तब अँगूठेसे दाहिनी नासाकोभी बंदकरले और श्वांस रोकके मनहीमन प्राणामायममंत्रको पढे और हृदयमें रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्माकी मूर्तिका ध्यान करता रहे उसको कुंभकप्राणायाम कहते हैं जब इसको करते हुये मंत्र पढचुके तब फिर बाँई नासापरसे दोनों अंगुली हटाले और दाहनी नासाको अँगूठेसे बंद रक्खे बाँई नासासे धीरे धीरे श्वास उतारता जाय और प्राणायाम मंत्रको पढता जाय जब मंत्र पू

वीर्नेय. गहै॥ अब प्राणायाम मंत्रका अर्थ लिखतेहैं (सवितुः (

ॐआपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥१॥

होजाय तब प्राणायाम समाप्त जानना इस श्वासके उतारनेका नाम रेचकहै रेचक करते समय स्फटिकके समान श्वेतवर्ण महेश्वर मूर्तिका मस्तकमें ध्यान करे इस प्रकार पूरक कुंभक रेचक करनेसे एक प्राणायाम होता है जो सामर्थ्य हो तो इसी प्रकार तीन वार करे और यह प्राणायामका मंत्र तीन मंत्रों करके बना हुआ है व्याहृती गायत्री आपोज्योति इसकी समाप्ति स्वरोंतकहै इस प्रकार

सब स्थावर जगमोंके पैदा करनेवाले (देवस्य) निरातिशय प्रकाश युक्तके (तत्) तिस (वरेण्यं) वरणीय प्रार्थना करने योग्य या सत्पुरुषों करके निरंतर ध्यान करने योग्य (भर्गः) भजनेवालोंके पाप नष्ट करनेवाले तेजका हम (धी-महि) ध्यान करतेहैं (यः) जो (नः) हमारी (धियः) बुद्धियोंको श्रेष्ठ कर्म्मोंमें (प्रचोदयात्) प्रेरे यानी नेक कामों में हमारी बुद्धियोंको लगावे कैसा वह तेज है कि भूः १ भुवः २ स्वः ३ महः ४ जनः ५ तपः ६ सत्यम् ७ इन सातों लोकोंमें व्याप्त या ये सातों लोकहैं स्वरूप जिसका फिर कैसा वह तेजहै (आपः) जलस्वरूपहै (ज्योतिः) ज्योतिरूपहै (रसः) रसरूपहै (अमृतम्) मोक्षरूपहै (ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्) भूः भुवः स्वः ये सब ब्रह्म हैं

सूर्य्यश्चेत्यस्यब्रह्मार्षिः प्रकृतिश्छंदः सूर्य्योदेव-
ताअपामुपस्पर्शनेविनियोगः॥ॐसूर्य्यश्चमाम-
न्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यः॥ पापेभ्योरक्ष-

प्राणायाम समाप्त करके फिर हाथमें जल लेक
सूर्य्यश्च इस विनियोगको पढकर छोडदे फिर सूर्य्य
इस मंत्रको पढकर आचमन करे परंतु इस मंत्र का
प्रातःकालकीही संध्यामें आचमन किया जाताहै
ध्याह्न सायंकालकीमें नहीं प्रातःकाल मध्याह्न सा
कालकी संध्यामें पहिले कहा हुआ प्राणाया मत
सब कर्म बराबरही किया जाता है परंतु फरक केवल

या ब्रह्मकरके व्याप्तहैं या व्याख्या प्राणायाम मंत्रकी हो चु
सूर्य्यश्च इस मंत्रका ब्रह्मा ऋषिहै प्रकृति छंदहै सूर्य्य दे
ताहै जलके उपस्पर्शनमें विनियोगहै ॥ प्रातःकालको
ध्याके आचमनके मंत्रकी व्याख्या ॥ सूर्य और (मन्यु)
और (मन्युपतयः) यज्ञपति इंद्रादिक अथवा क्रोध औ
क्रोधपति इन्द्रिया (मन्युकृतेभ्यः) क्रोधसे कियेहुये (
पेभ्यः) पापोंसे (मा) मेरी (रक्षन्तां) रक्षाकरें या
ऐसा क्रोध मुझको नहो जिससे कि मै न करने लायक

न्तां॥यद्रात्र्यापापमकार्षं॥मनासावाचाहस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना॥रात्रिस्तदवलुम्पतु ॥ यत्किंचिद्दुरितं मयि॥इदमहमापोऽमृतयोनौसूर्य्ये ज्योतिषिजुहोमिस्वाहा १इतिप्रातः। आपः पुनंत्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छंदआपो देवताअपामु

प्राणायामके वादके इस आचमनमें है प्रातःकालकी संध्यामें इस मंत्रसे आचमन किया जाता है और मध्याह्नकी संध्यामें आपःपुनंतु इस मंत्र करके और सायंकालमें अग्निश्च इस मंत्रकरके आचमन करे जैसे कि प्रातःकालकी संध्यामें

मको करूं (यत्) जो (पापं) पाप मैंने (रात्र्या) रात्रिमें (मनसा) मन करके (वाचा) वाणी करके (हस्ताभ्यां) हाथों करके (पद्भ्यां) पैरों करके (उदरेण) उदरकरके (शिश्ना) शिश्न करके यानी लिंगेन्द्रिय करके (अकार्षं) कियाहै (तत्) तिस मेरे पापको (रात्रिः) रात्रि (अवलुम्पतु) नष्टकरै (यत्किंचित्) जो कुछ (दुरितं) पाप (मयि) मेरेमेंहै (इदंआपः) सो यह जलहै इसको (अहं) मैं हृदयकमलमें स्थित (अमृतयोनौ) अमृतकी योनि (ज्योतिषि) ज्योतिःस्वरूप (सूर्य्ये) सूर्य्यके विषय (जुहोमि) हवन करताहूं (स्वाहा) शोभन हवनहो यानी वह पाप नष्ट होजाय फिर मुझसे न बन पडे ॥ आगे मध्याह्नके आचमन मंत्रकी

पस्पर्शने विनियोगः ॥ ॐआपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवीपूता पुनातु माम् ॥ पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पूनातु मां ॥ यदुच्छि ष्टमभोज्यञ्च यद्वा दुश्चरितं मम ॥ सर्वंपुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहꣳ स्वाहा इतिमध्याह्न सूर्यश्च इस मंत्र करके आचन किया वैसेही मध्य ह्नकी संध्यामें प्राणायाम करनेके बाद आपः पुनं

व्याख्या लिखतेहैं, (आपः) जल (पृथिवी) इस मेरे पा र्थिव शरीरको (पुनन्तु) पवित्रकरें और (पृथ्वीपूता) पवि हुआ देह (मां) मुझ क्षेत्रज्ञको (पुनातु) पवित्रकरे कि जल केवल पृथिवीही को न पवित्रकरे (पुनंतु ब्रह्मणस्पति ज्ञानके पति आत्माकोभी पवित्रकरे (ब्रह्मपूता) पवित्र हुआ ब्रह्म (पुनातुमां) मुझे पवित्रकरे (यदुच्छिष्टं) जो जूठ और (अभोज्यं) नखाने योग्य हमने खाया हो या जो (दुश्चरि तंमम) हमारा बुरा काम है या जो (असतांच प्रतिग्रहं) न लेने लायक दान लियाहो (सर्वं) इन सबोंसे (आपः मां पुनन्तु) जल मुझको पवित्र करें यानी आचमन द्वारा हमारा सब पा

अथसायंसंध्याचमनमंत्रः॥ अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छंदोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः॥ ॐअग्निश्च मामन्युश्चम न्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः॥ पापेभ्योरक्षन्तां॥यदह्ना पापमकार्षं॥मनसा वाचा हस्ताभ्यां॥प-

इस मंत्र करके आचमन करे और सायंकालमें अग्निश्च इस ऊपर लिखे मंत्रसे आचमन करें इतनाही फरक है बाकी सब काम तीनों कालोंमें समान है इस प्रकार आचमन करके फिर हाथमें जल लेकर आपो इस ऊपर लिखे विनियोगको पढ़कर जल

स्वाहा होजाय कि फिर हमसे न बन पडे * अग्निश्च इस मंत्रका रुद्र ऋषिहै प्रकृति छंद है अग्निदेवताहै आचमन करनेमें विनियोगहै, अग्नि और यज्ञ और यज्ञपति इंद्रादिक अथवा क्रोध और क्रोधपति इंद्रियाँ क्रोधसे किये हुये पापोंसे मेरी रक्षाकरें यानी ऐसा क्रोध मुझको नहो जिससे कि न करनेलायक कामको करूं और जो पाप मैंने दिनमें मन करके

ध्यासुदरेण शिश्ना॥अहस्तदवलुम्पतु॥यत्किं
दुरितं मयि॥ इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्यो
तिषि जुहोमि स्वाहा॥इतिसायम्॥आपोहिष्ठेत्या
दि त्र्यृचस्य सिंधुद्वीप ऋषिर्गायत्रीछंदः आपो
देवतामार्जने विनियोगः॥ ॐआपोहिष्ठा मयो
भुवः॥१॥ तान ऊर्जेदधातन॥२॥ महे
हाथसे छोडदे फिर आपोहिष्ठा इत्यादि सात मंत्रों
अपने शिरपर जल छिडके एक एक मंत्र बोलता जा

वाणी करके हाथों करके पैरों करके उदर करके लिंगेन्द्रि
करके कियाहै तिस मेरे पापको दिन नष्ट करे और जो कु
पाप मेरेमें हैं सो यह जलहै इसको मैं सत्य जोतिःपरमा
त्माके विषय हवन करताहूं सो शोभन हवन हो यानी वह पा
नष्ट होजाय फिर मुझसे न बन पडे*आपोहिष्ठा इत्यादि इ
तीनों ऋचोंका सिंधुद्वीप ऋषि है गायत्री छन्दहै जलदेवतामा
नमें विनियोगहै॥ अपोहिष्ठा इत्यादि ये तीन ऋचाहैं तिन
नौपाद हैं तिनका अर्थ॥ हे (आपः) जल (हि) जि
कारण तुम (मयोभुवः) सुखके देनेवाले (स्थ) हो ति
कारण (नः) हमें (ऊर्ज्जे) बलकारक अन्नके (दधात

रणायचक्षसे ॥ ३ ॥ योवःशिवतमोरसः॥ ४ ॥
तस्यभाजयतेहनः ॥५॥उशतीरिवमातरः६त-
स्मा अरंगमामवः॥७॥यस्यक्षयायजिन्वथ॥८॥
आपोजनयथाचनः॥९॥ॐद्रुपदादिवेतिकोकि-
और जल छिडकता जाय फिर आठवेंसे पृथिवीको
छिडके नवेंसे फिर शिरको छिडके फिर हाथमें जल

देनेवालेहो और (महेरणाय) महारमणीयके यानी ब्रह्मके (चक्षसे) दर्शन योग्य हमें करो अर्थात् जैसे हम बलयुक्त और ब्रह्म साक्षात्कारमें समर्थहों वैसा करो ॥ हे जल (उशतीः) पुत्र सुखके चाहनेवाली (मातरइव) माताकेसमान आप (योवः) जो तुम्हारा (शिवतमोरसः) कल्याणरूपरस है (इह) इस लोकमें (तस्य भाजयत) तिस रसके भागी (नः) हमें करो अर्थात् पुत्र स्नेहवाली माता जैसे लड़केको अपना दूध पिलाके कल्याणयुक्त करती है तैसेही तुमभी अपने रससे हमको कल्याणयुक्त करो (आपः) हे जल (यस्य क्षयायजिन्वथ) जिस जगत्के आधारभूत रसके एक अंशसे आप जगत्को तृप्त करते हैं (तस्मा अरंगमामवः) तिस तुम्हारे रससे हम सदा तृप्तहों और (आपोजनयथाचनः) हे जल आप हमको उस रसके भोगनेमें समर्थ करो ॥ द्रुपदादि व इस मंत्रका कोकिल राजपुत्र ऋषि है अनुष्टुप् छंदहै सौत्रा-

लोराजपुत्रऋषिरनुष्टुप्छंदःसौत्रामण्यवभृथेवि-
नियोगः॥ ॐद्रुपदादिवमुमुचानःस्विन्नस्नातोम
लादिव॥पूतंपवित्रेणेवाज्यमापःशुन्धन्तुमैनसः८
अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिरनुष्टुप्छंदः भा
ववृत्तोदेवताअश्वमेधावभृथे विनियोगः ॥ ॐ
ऋतंचसत्यंचाभीद्धात्तपसोध्यजायत। ततोरा

लेकर द्रुपदा इस विनियोगको पढकर जल हाथसे छो
डदे फिर जल हाथमें लेकर द्रुपदादिव इस मंत्रको
पढकर जलको माथेसेलगाकर छोडदे फिरहाथमें जल
लेकर अघमर्षण इस विनियोगको पढकर छोडदे फिर
हाथमें जल लेकर नासिकासे लगाकर(ऋतंच)इस मं
न्त्रको तीनवार या एकवार पढकर उस जलको अपने

मणि अवभृथमें इसका विनियोगहै॥ द्रुपदादिव इस मंत्रका
अर्थ॥ (द्रुपदादिव मुमुचानः) जैसे पादुकासे अलग होता
हुआ पादुका दोषसे रहित होताहै और (स्विन्नः स्नातः मला
दिव) जैसे पसीना आयाहो जिसको वह स्नान करके मलसे
रहित होताहै और (पवित्रेणवाज्यम्) जैसे तपाने से घी
शुद्ध होताहै तैसेही (आपः शुन्धतुमैनसः) जल मुझको
पापसे शुद्ध करे*अघमर्षण सूक्तका अघमर्षण ऋषि अनुष्टुप्

ऽयजायतततः समुद्रोअर्णवः॥समुद्रादर्णवादधिसं-
वत्सरोअजायत ॥ अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यामि
षतोवशी॥ सूर्य्याचंद्रमसौधातायथापूर्वमकल्पय
त् ॥ दिवंचपृथिवींचांतरिक्षमथोस्वः॥ अंतश्चरसी
तितिरश्चीनऋषिरनुष्टुपूछंदःआपोदेवताआपामुप
स्पर्शने विनियोगः॥ ॐ अंतश्चरसिभूतेषुगुहायां-
विश्वतोमुखः ॥ त्वंयज्ञस्त्वंवषट्कारआपोज्यो
तीरसोमृतम्॥

शरीरसे निकला हुआ अपना पाप समझकर अपने
बांईं तरफ गेर दे फिर हाथमें जल लेकर अंतश्चरसीति

छंदहै भाववृत्त देवताहै अश्वमेध अवभृथमें इसका विनियोग
है ॥ ऋतं च इस मंत्रका अर्थ पहिले लिख चुकेहैं ॥ अंतश्चरसि
इस मंत्रका तिरश्चीन ऋषिहै अनुष्टुप् छंदहै जलदेवताहै जलके
उपस्पर्शनमें विनियोगहै ॥ अंतश्चरसि इस मंत्रका अर्थ ॥ हे
जल तुम भूतमात्रके बीचमें विचरतेहो इस ब्रह्माण्डरूप गुहामें
सब तर्फ आपकी गतिहै और तुमही यंज्ञ और वषट्कारहो
और तुमही जलरूपहो ज्योतिःस्वरूपहो रसरूपहो अमृतरूपहो

उद्वयमित्यस्यप्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप्छंदः सूर्य्यो देवतासूर्य्योपस्थानेविनियोगः ॥ ॐउद्वयन्तम सस्परिस्वः पश्यन्तउत्तरंदेवंदेवत्रासूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ उदुत्यमित्यस्यप्रस्कण्वऋषि रनुष्टुपूछंदः सूर्य्योदेवतासूर्य्योपस्थानेविनियो

इस विनियोग मंत्रको पढकर छोडदे फिर अंतश्चरसि इस मन्त्रको पढकर आचमन करे फिर ॐभूर्भुवः स्वः इति गायत्री मन्त्रको पढकर दोनों हाथोंसे एकवार सूर्य्यको अर्घ्यदे फिर सूर्य्यके सामने मुख करके खडा होकर एक पैरसे वा एक पैरकी अगाडी सिर्फ पृथिवी से लगी रहे दूसरा पैर संपूर्ण टिका रहे प्रातःसंध्यामें और सायंसन्ध्यामें दोनों हाथ मिलाके पसारके सूर्य्यके सामने खडा और मध्याह्न संध्यामें दोनों हाथ ऊपरको करके सूर्य्यके सामने खडा होकर उद्वय यहाँसे लेकर

(वयं) हम (तमसः उत्) अंधकार रूप भूलोकसे ऊपर विराजमान (स्वः) स्वर्गलोकको (परिपश्यंतः) देखते हुये और (देवं सूर्य्यं) देवसूर्य्य (उत्तरं) उत्कृष्टतरको देखते हुये (देवत्रा) देव करके राक्षित हुये (उत्तमं ज्योतिः) उत्तम

गः ॥ उदुत्यंजातवेदसंदेवंवहंतिकेतवः ॥ दृशे-
विश्वायसूर्य्यम् ॥२॥चित्रमित्यस्यकौत्सऋषिः
त्रिष्टुप्छंदः सूर्य्योदेवतासूर्य्योपस्थानेविनियो
गः ॥ ॐचित्रंदेवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य
वरुणस्याग्नेः ॥ आप्राद्यावापृथिवीमंतरिक्षꣳ
सूर्य्यआत्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ ३ ॥
शतंभूयश्च शरदः शतात् । यहाँतक जो चार

ज्योतिस्वरूप ब्रह्मको (अगन्म) प्राप्त होय ॥ दूसरे मंत्रका अर्थ (केतवः) बुद्धिके बढानेवाली किरण (जातवेदसं) उत्पन्न हुआ कर्म फल जिससे ऐसे (त्यंदेवंसूर्य्यं) प्रसिद्ध सूर्य्यदेवको (दृशेविश्वाय) संसारके देखनेके लिये (उद्वहंति) ऊपरको लिये चलती हैं ॥ २ ॥ तीसरे मंत्रका अर्थ (चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः) मित्र, वरुण, और अग्निदेवताके नेत्ररूप इन तीनोंहीके नहीं बल्कि समस्त जगत्के नेत्ररूप क्योंकि सूर्य्यके प्रकाशसेही सब देखते हैं इस कारण सबके नेत्ररूप और (देवानां अनीकं) दीप्तियुक्त किरणोंके पुंज और जो (आप्राद्यावापृथिवीमंतरिक्षꣳ) स्वर्ग पृथिवी आकाशको अपनी किरणों करके व्याप्त करते हैं और(जगतस्तस्थुषश्चआत्मा) स्थावर जंगम विश्वके अंतर्यामी ऐसे सूर्य (चित्रं उदगात्) आश्चर्यके साथ उदय हुये

तच्चक्षुरित्यक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दो दध्यङ्ङाथर्वणऋषिःसूर्य्योदेवता सूर्य्योपस्थानेविनियोगः ॥ ॐतच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शतꣳशृणुयाम शरदःशतं प्रब्रवाम शरदः शतमदी-

मंत्र और चार विनियोग ऊपर लिखे हैं इनको पढ

आश्चर्य यही है कि उदय होतेही रात्रिके अंधकारको और गणोंकी ज्योतिको हरलेते हैं ॥ ३ ॥ चतुर्थ मंत्रका अर्थ(तच्चक्षुः) सो जगत्के नेत्ररूप (देवहितं) देवताओंके हितकारक (शुक्रं) दीप्तिमान्सूर्य (पुरस्तात्) पूर्वदिशामें (उच्चरत) उदय हुये तिनकी कृपासे (पश्येम शरदःशतं) हम सौ वर्षतक देखें यानि हमारी आंख सौ वर्षतक अच्छीबनी रहें और (जीवेम शरदः शतं) सौ वर्षतक जीवें यानी सौ वर्षतक हमारा जीवन पराये आधीन नरहे और (शृणुयामशरदः शतं) सौ वर्षतक हम सुने यानी सौ वर्षतक हमारी सुननेकी ताकत अच्छी बनी रहे (प्रब्रवाम शरदः शतं) और सौ वर्षतक बोलें यानी सौ वर्षतक हमारी बोलनेकी ताकत बनी रहे (अदीना-

नाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥१॥
ओं हृदयायनमः १ ओंभूः शिरसेस्वाहा२ ॐभु-
वः शिखायै वषट्३ ॐस्वः कवचायहुं४ॐभूर्भु-
वः नेत्राभ्यां वौषट्५ॐभूर्भुवः स्वः अस्त्रायफट्
ॐतेजोसीति देवाऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीछ-
न्दोगायत्र्यावाहने विनियोगः ॥ ॐतेजोसिशुक्र

इसको उपस्थान कहते हैं ॐहृदयाय नमः इत्यादि
छः मंत्रोंकरके अंगन्यास करे यानि पहिला मंत्र पढ
कर हृदयके हाथ लगावे दूसरा पढकर शिरके हाथ
लगावे तीसरा पढकर चोटेके हाथ लगावे चौथा
पढकर दोनों भुजाओंके हाथ लगावे पांचवां पढकर
नेत्रोंके हाथ लगावे छठा पढकर अपने चारों तरफ
चुटकी बजावे इस प्रकार तीनवार करे फिर तेजोसि

स्यामशरदः शतं) और सौ वर्षतक किसीसे दीनता नकरें
न केवल सौही वर्षतक बल्कि (भूयश्च शरदः शताव्) सौसे
भी अधिक वर्षतक हम देखें जीवें सुने बोलें अदीनरहें यह
चारों उपस्थान मंत्रोंका अर्थ होचुका अब तेजोसि इस आवा-
हन मंत्रका अर्थ लिखतेहैं हे गायत्रि तुम (तेजोसि) कांति-
का कारण तेजहो (शुक्रमसि) प्रकाशमानहो (अमृतं असि)
विनाश रहितहो (धाम) मनके लगानेका स्थान हो (नाम
असि) प्राणियोंके झुकानेवाली हो यानि आपके उपासकको

मस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृ
ष्टंदेवयजनमसि ॥ ॐगायत्र्यस्येकपदीद्विपदी
त्रिपदी चतुष्पद्यपदसिनहिपद्यसेनमस्ते तुरी

**इस विनियोग सहित मंत्रको पढकर गायत्री आ-
वाहन करे फिर गायत्र्येकपदी इस ऊपर लिखे मंत्रको**

देखकर सब आदमी झुकतेहैं (देवानां अनाधृष्टं प्रियं असि) देवताओंके सर्वोत्तम प्रियहो और (देवयंजनं असि) देवताओंके पूजनके साधन हो इस मंत्रका अर्थ हो चुका आगे गायत्र्यस्पेकपदी इस उपस्थान मंत्रका अर्थ (गायत्र्यस्ये-कपदी द्विपदी त्रिपदी) हे गायत्रि तुम त्रिलोकीरूप पद करके एक पदी हो । त्रयीविधा रूपपद करके द्विपदी हो प्राण आदि पद करके त्रिपदीहो (चतुष्पद्यपदसि) सूर्य्य मण्डलके भीतर विद्यमान पुरुष रूपसे तुम चतुष्पदी हो इनही चार पदोंसे आप उपासकों करके जानी जाती हो अन्यथा नहीं इससे अपदहो (दर्शताय) दर्शनके योग्य (परोरजसे) रजो गुणसे परे बर्तमान यानी शुद्ध सत्व स्वरूप (तुरीयाय पदाय) चतुर्थ पद यानी ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनोंसे भिन्न ब्रह्मस्वरूप आपको या कारणरूप तीन

यायदर्शतायपदायपरोरजसेसावदोमाप्रापत् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधी
महि ॥ धियोयोनःप्रचोदयात् ॥
ॐ उत्तरेशिखरेदेविभूम्यांपर्वतमूर्धनि॥ब्राह्मणे
भ्योऽभ्यनुज्ञातागच्छदेवियथासुखम् ॥

पढकर गायत्रीका उपस्थान करे यानी गायत्रीकी स्तुति करे फिर चित्तको एकाग्र करके गायत्री मंत्र-का जप करे जप करनेका एक गायत्री मंत्र ऊपर लिखा हुआ है यथाशक्ति जप करके फिर उत्तमे शिखरे इस ऊपर लिखे मंत्रसे विसर्जन करे (अलम्)

उपाधियोंसे रहित ईशपद आपको नमस्कार है जिस नमस्कारके करनेसे (असौ) यह तुम्हारी प्राप्तिमें विघ्न करनेवाला जो पाप और (अदः) इस पापका काम जो तुम्हारी प्राप्तिमें विघ्न करना सो (मामापत्) मुझको न प्राप्तहो अर्थात् मैं पर-ब्रह्मस्वरूप आपको प्राप्तहोऊं और गायत्री मंत्रका अर्थ पहिले लिख आये हैं इस वास्ते नहीं लिखते ॥ विसर्जन मंत्रका अर्थ पृथिवीपर मेरुपर्वत है उसके उत्तरशिखरपर गायत्री देवी स्थितहैं इस कारण हे देवि ! ब्राह्मण जो आपके उपासकहैं आपके अनुग्रहसे प्रसन्न हैं तिनके लिये सम्मतिका प्रयोग करके सुखसे अपने स्थान उस उत्तमाशिखरको पधारिये इति ॥

श्रीः ।

अथ देवर्षिपितृतर्पणम् ।

श्रीगणेशाय नमः।। अथ तर्पणविधिःप्रारभ्यते।। तत्रादौसंकल्पः।।पूर्व्वाभिमुखोभूत्वासव्येनाचम्य अपवित्रः पवित्रोवासर्वाऽवस्थां गतोपिवा ।। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।। १।। द्वौदर्भौदक्षिणेहस्ते सव्येत्रीण्यासने तथा।।पदामूलेशिखायांचसकृद्यज्ञोपवीतके।। २।। ॐतत्सत् श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञयाप्रवर्तमानस्याद्यब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जंबूद्वीपेभरतखंडे रामराज्ये आर्यावर्तैकदेशांतरगते अमुकनाम्निक्षेत्रे वैवस्वतमन्वंतरे अष्टाविंशतिमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे महानद्या गोदावर्यांदक्षिणेतीरे देवब्राह्मणानां सन्निधौ अमुकशके

अमुकनाम्नि संवत्सरेअमुकायने अमुकगोले अमुकर्तौ मासानामुत्तमेमहामांगल्ये अमुकमासेअमुकपक्षे अमुकतिथौअमुकवासरे अमुकनक्षत्रयोगकरणलग्नमुहूर्तान्वितायांअमुकाऽमुकराशिवेलायां एवंगुणविशिष्टायांपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकनामाहं ममोपात्तदुरितक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देवर्षिपितृतर्पणं करिष्ये इतिसंकल्प्य ॐब्रह्मादयो देवाआगच्छन्तुगृह्णन्त्वेतान् जलाञ्जलीनित्यावाह्यदेवतीर्थेनअक्षतोदकेनैकैकांजलिनातर्पयेत् ॥ तद्यथा ॥ ब्रह्मातृप्यताम् विष्णुस्तृप्यताम् रुद्रस्तृप्यताम् प्रजापतयस्तृप्यन्ताम् देवास्तृप्यन्ताम् छन्दांसितृप्यन्ताम् ऋषयस्तृप्यन्ताम् वेदास्तृप्यन्ताम् पुराणाचार्य्यास्तृप्यन्ताम् गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् इतराचार्य्यास्तृप्यन्ताम् संवत्सरास्सावयवास्तृप्यन्ताम् देव्यस्तृप्यन्ताम् अप्सरसस्तृप्यन्ताम् देवानुगास्तृप्यन्ताम् नागास्तृप्यन्ताम् सागरास्तृ

प्यन्ताम् पर्व्वतास्तृप्यन्ताम् सरितस्तृन्यप्ताम् मनुष्यास्तृप्यन्ताम् यक्षास्तृप्यन्ताम् रक्षांसितृप्यन्ताम् पिशाचास्तृप्यन्ताम् सुपर्णास्तृप्यन्ताम् भूतानितृप्यन्ताम् पशवस्तृप्यन्ताम् वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् ओषधयस्तृप्यन्ताम् भूतग्रामाश्चतुर्विधास्तृप्यन्ताम् इतियवोदकेनैकैकमञ्जलिंदेवतीर्थेन दद्यात्॥ ततः मरीचिस्तृप्यन्ताम् अत्रिस्तृप्यताम् अङ्गिरास्तृप्यताम् पुलस्त्यस्तृप्यताम् पुलहस्तृप्यताम् क्रतुस्तृप्यताम् प्रचेतास्तृप्यताम् वसिष्ठस्तृप्यताम् भृगुस्तृप्यताम् नारदस्तृप्यताम्॥ देववत्॥ ततउत्तराभिमुखो निवीतीप्राजापत्येन तीर्थेनाञ्जलिद्वयेन तर्प्पयेत्॥ सनकादयस्सप्तमनुष्या आगच्छन्तुगृह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन् सनकस्तृप्यताम् २ सनन्दनस्तृप्यताम् २ सनातनस्तृप्यताम् २ कपिलस्तृप्यताम् २ आसुरिस्तृप्यताम् वोढुस्तृप्यताम् २ पञ्चशिखस्तृप्यताम् ॥ २ ॥

ततोऽपसव्यम्। तिलमिश्रितंजलंगृहीत्वा दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुर्जलाञ्जलित्रयेण पितृतीर्थेनतर्प्पयेत्॥ कव्यवाडनलादयोदिव्यपितर आगच्छन्तुगृह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन्॥ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदंजलंतस्मैस्वधा ३ सोमस्तृप्यतामिदंजलंतस्मैस्वधा ३ यमस्तृप्यतामिदंजलंतस्मैस्वधा ३ अर्यमातृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधा ३ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तामिदंजलंन्तेभ्यः स्वधा ३ सोमपास्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यःस्वधा ३ वर्हिषदस्तृप्यन्तामिदंजलंतेभ्यःस्वधा ३ ततोयमादिचतुर्दशमूर्तय आगच्छन्तुगृह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन्॥ यमायनमः ३ धर्म्मराजायनमः ३ मृत्यवेनमः ३ अन्तकायनमः ३ वैवस्वतायनमः३कालायनमः ३ सर्वभूतक्षयायनमः ३ औदुम्बरायनमः३दध्नायनमः ३ नीलायनमः३ परमेष्ठिनेनमः ३ वृकोदरायनमः ३ चित्रायनमः ३ चित्रगुप्तायनमः ३ इहागच्छन्तुमे

पितरइदंगृह्णन्तुमेजलम् ॥ अमुकगोत्रः अस्मात्पि-
ताऽमुकनामा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलंतस्मै
स्वधा ३ अमुकगोत्रोऽस्मात्पितामहोऽमुकनामा
रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदंजलं तस्मैस्वधा ३ अमुक
गोत्रः अस्मत्प्रपितामहोऽमुकनामाआदित्यस्वरूप
स्तृप्यतामिदंजलं तस्मैस्वधा ३ अमुकगोत्राअ
स्मन्माताऽमुकीदेवीतृप्यतामिदंजलंतस्यैस्वधा ३
अमुकगोत्राअस्मात्पितामहीअमुकीदेवीतृप्यतामि
दं जलंतस्यैस्वधा३ अमुकगोत्राअस्मत्प्रपितामही
अमुकीदेवी तृप्यतामिदं जलं तस्यैस्वधा ३ अमु
कगोत्रोऽस्मन्मातामहोमुकनामा वसुस्वरूपस्तृ
प्यतामिदंजलन्तस्मैस्वधा ३ अमुकगोत्रोऽस्मत्प्र
मातामहोऽमुकनामारुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदंजलंत
स्मैस्वधा ३ अमुकगोत्रोऽस्मद्वृद्धप्रमातामहोमुक
नामा आदित्यस्वरूपस्तृप्यंतामिदंजलन्तस्मैस्व
धा ३ अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही अमुकीदेवी

तृप्यतामिदंजलंतस्यैस्वधा ३ अमुकगोत्राअस्म
त्प्रमातामहीअमुकीदेवी तृप्यतामिदंजलन्तस्यैस्व
धा ३ अमुकगोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामहीअमुकी
देवीतृप्यतामिदंजलन्तस्यैस्वधा ॥३ ॥ ततआचा
र्य्यादीन्नामगोत्राकारैस्तर्प्पयेत् ॥ ततः येबान्धव
बान्धववाये येऽन्यजन्मनिबान्धवाः॥ तेसर्व्वेतृप्तिमा
यान्तु येऽस्मत्तोयाभिकाङ्क्षिणः ॥१॥ येमेकुलेलु
प्तपिण्डाःपुत्रदारविवर्जिताः ॥ तृप्यन्तुपितरःसर्व्वे
मातृमातामहादयः॥ २ ॥ अतीतकुलकोटीनां स
प्तद्वीपनिवासिनाम् ॥ आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु
तिलोदकम् ॥३॥इतिमंत्रैःपृथक्सतिलमुदकंदद्यात्
ततःयेचास्माकंकुलेजाता अपुत्रागोत्रिणोमृताः ॥
तेपिबन्तुमयादत्तंवस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥४॥ इति
वस्त्रंनिष्पीड्य सव्येनाचम्यसूर्यादिभ्योऽर्घ्यंदद्या
त् ॥ एहिसूर्य्यसहस्रांशो तेजोराशेजगत्पते ॥अनु
कम्पयमांभक्त्यागृहाणार्घ्यंनमोऽस्तुते ॥५॥ ब्रह्मा

सुरारिस्त्रिपुरान्तकारिर्भानुश्शशीभूमिसुतोबुधश्च
गुरुश्चशुक्रश्शनिराहुकेतवस्सर्वेग्रहाश्शान्तिकरा
भवन्तु ॥ ६ ॥ इतिदेवर्षिपितृतर्पणं समाप्तम् ।
श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथगोग्रासः ॥ सुरभिर्मात
सुरभिःपिता सुरभिःपितृतारिणी ॥ गोग्रासंचमय
दत्तं सुरभेप्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ हन्तकारः ॥ हन्
कारंमयादत्तं पितृनुद्दिश्य हेतवे ॥ गृहाण त्वं
पांकृत्वा क्षेमायुष्यंकरोतुमे ॥ १ ॥ अथातिथिपू
नम्॥ अतिथेर्दर्शनं पुण्यंविष्णुमूर्तिर्विराजते ॥
तृनुद्दिश्यदीयन्ते पितृदेवेयथार्पणात् ॥ १ ॥ अ
सव्यम् ॥ यमोसियमदूतोसिवायसोसिमहाबल
अहोरात्रकृतंपापंबलिंभक्षन्तुवायसाः ॥१ ॥ श्वान
लिः श्वानमार्जारकीटादिबलिभक्षेभ्यश्चदीयताम्
ममक्षेमायचारोग्यंरक्षरक्ष कुलंमम ॥१॥समाप्तम्

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—खेमराज श्रीकृष्णदास
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना,खेतवाड़ी—मुंबई.

जाहिरात ।

	की० रु० आ०
कृष्णकर्णामृत	०—५
शृंगारतिलक भाषाटीका सहित	०—४
राधाविनोद भाषाटीका	०—२
रंभाशुकसंवाद संस्कृत मूल व प्रत्येक श्लोकका कवित्तमें टीका व भाषाटीकासहित	०—२
शृंगारादिनवरस निरूपण भाषाटीका—(शृङ्गार का अतीव चमत्कारी ग्रन्थ)	०—६
पद्यावलीअनेकमहानुभावोंके संगृहीतश्लोक	०—८
सटिप्पणीक कविरहस्यम्	०—६
राधाविनोद भाषाटीका	०—२
मध्वविजय	०—१२
कृष्णामृततरंगिका सटीका	०—५
विद्यासुन्दर और चौरपंचाशिका भाषाटीका सहित	०—५

इति
संध्योपासन-भाषाटीका
देवर्षिपितृतर्पण
समाप्त ।

श्रीः

श्रीशम्भुपचीसी.

तथा

गोकरणमाहात्म्य.

पंडित नारायणप्रसाद मुकुंदराम-
सम्पादित।

जिसमें
कैलासवासी अविनाशी सुखराशी श्रीसदाशिव-
जीकी विनयके कवित्त हैं।

उसको
भगीरथात्मज हरिप्रसादजीने
"प्रबोधरत्नाकर" छापखानेमें छपायके
प्रसिद्ध किया.

मुम्बई.

संवत् १९५२ शके १८१७.

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीगिरिजापतये नमः ॥

अथ

॥ श्रीशंभुपचीसीप्रारम्भः ॥

॥ प्रथमवंदना श्रीपार्वतीजीकी ॥

सवैया ॥ ॥ शुंभ निशुंभ बली मधु कै
रक्तविजादि दल्यो दल भारी ॥ देवनपै
कष्ट पर्यो जबहीं तबहीं तुम ताहि उबा
तैसेहि दास मुकुन्दके संकट बेगि हरौ
रिराजकुमारी ॥ है अवलंब तिहारोइ हे
गदम्ब विलम्ब कहा मम बारी ॥ १ ॥

॥ अथ श्रीशिवस्तुतिपंचक ॥

सवैया ॥ ॥ शिवकी मन आश लग
रह्यों नहिं औरनते कछु नेक चहौं ॥
तापतिके ढिग जाय बसौं फिरि ताल

स लाभ लहौं ॥ सुररूख मिलै तेहि छोंड़ि
हा अब आकनको लपटाय गहौं ॥ आधी-
कहौं तुमसे को बड़ो जेहिके दरबारमें
ाय रहौं ॥ १ ॥ कीनी नहीं इतनो करणी
हिके बलते कछु वित्त लहौं ॥ देख्यो नहीं
ोई देव एतो अरजी अपनी ज्यहि पास
हौं ॥ त्रयलोक्यमें दानिशिरोमणि हौ
ारिजापति हाथ हमार गहौ ॥ आधीन
हौं तुमसे को बड़ो जेहिके दरबारमें जाय
हौं ॥ २ ॥ भवसागर वार न पार कहूं गति
ागकी ज्यो चहुँ ओर बहौं ॥ तुम्हरी किरपा
लयान सोई तेहिके बल चाहत पार
हौं ॥ तुमको कछु बात नहीं शिवजी पर
ाहिं अथाह सो साँच कहौं ॥ आधीन कहौं
मसे को बड़ो ज्यहिके दरबारमें जाय रहौं
३ ॥ दानी वही बिन मांगे जो देइ मैं या-

चत हौं तबहूं न लहौं ॥ नाम गरीबनिवा
कहा मैं गरीब रह्यो तो कहा धौं कहौं म
कोटिन रंकसे राउ भये हम रंकके रंक
चारत हौं ॥ आधीन कहौं तुमसे को बड़ो
ज्यहिके दरबारमें जाय रहौं ॥ ४ ॥ दीन द
यालु कृपालु हमैं शरणागत राखिये भि
चहौं ॥ मोहिं किंकर आपन जानि सदा ि
रिजापति लाज सम्हारि गहौं ॥ गनिये न
दोष कृपा करिये केहिके ढिग जाय कल
कहौं ॥ आधीन कहौं तुमसे को बड़ो ज्यो
के दरबारमें जाय रहौं ॥ ५ ॥

॥ अथ आपदाहरणपंचक ॥

सवैया ॥ ॥ तुम दानी बड़े हम दीन रहैं
हा हमरी तुम्हरी अबतौ सरिहै ॥ शिवना
की लाज करौ हरजू नतु व्हैहै हँसी हमैं
परि है ॥ टुक कोरसे देखि अधीनहुँको

श्रीरामब्रह्मचारी

कज शीश हृदय धरि है ॥ हरजू हरिये हमरी बिपदा तुम्हरे बिन कौन कृपा करिहै॥ १ ॥ नहिं नाम जप्यों तुम्हरो कबहूं कछु ध्यानहुं ना हृदये धरिहैं ॥ नहिं श्रीफल पत्र चढ़ायों कहूं नहिं अक्षत चंदन लै गरिहैं ॥ आश बड़ी अभिलाष यही हमरो दुख शंकरजी हरिहैं ॥ हरजू हरिये हमरी विपदा तुम्हरे बिन कौन कृपा करिहैं ॥ २ ॥ भ्रम भूल्यो अबै इतही उतही नहिं नाथको जाण्यो दयागिरि हैं ॥ जबलौं तुम्हरे पद ना भजिहैं तबलौं दुख सागरमें परिहैं ॥ याँचत हों दरबार खड़ो अब औरके द्वारन को फिरिहैं ॥ हरजू हरिये हमरी बिपदा तुम्हरे बिन कौन कृपा करिहैं ॥ ३॥ नाग जटा शिर गंग लसै शशि भाल महाछबिसों भरिहै ॥ अंग अनूपम खाक घिसे डमरू शिरमाल गरे परि

है॥वेष तो ऐसो अभेष कियो पै सुरेश विशु
की क्या सरि है॥ हरजू हरिये हमरी बिपद
तुम्हरे बिन कौन कृपा करिहै ॥ ४ ॥ पाप
अजामिलसे बढ़िकै तकिकै हमका नरक
डरिहै ॥ अब ऐसे अधीन महाखलको आ
सको बलि है जो हमैं तरिहै॥ गिरिजापति
हीकी है आश लगी अब देव न और कु
फिरि है॥ हरजू हरिये हमरी बिपदा तुम
बिन कौन कृपा करिहै ॥ ५ ॥

॥ अथ शिवप्रार्थनापंचक ॥

सवैया ॥ ॥ मोर मनोरथ जो पुरवौ शि
सत्य कहौं करि तोरि दोहाई ॥ विप्रनवृ
जिवाँइ भली विधि वेद पुराण पढ़ौं चि
लाई ॥ मन्दिर देवनके विरचौं तुम्हरे शि
सोनेको छत्र धराई ॥ ठाढ़ पुकारतहौं क
शिवजू हमरी सुधि क्यों बिसराई ॥ १

तुम्हरे पदपंकजके बलसे न गनौं कछु दारि-
द की कटकाई ॥ हे शिवजी यह दुष्ट दरिद्रपै
क्यों न त्रिशूलकी धार चलाई ॥ बेगि सनाथ
करौ शिवजू न अधीनपै एती धरौ कठि-
नाई ॥ ठाढ़ पुकारतहौं कबसे शिवजू हमरी
सुधि क्यों बिसराई ॥ २ ॥ गौर शरीर गले
मुंडमाल विशाल त्रिशूल धरे सुखदाई ॥
मांग जटा हुलसैं विलसैं विष सोहत कंठ
महाछबि छाई ॥ बैल चढ़े अँग धूरि घसे
शशि शोभित भाल मनोहरताई ॥ ठाढ़
पुकारतहौं कबसे शिवजू हमरी सुधि क्यों
बिसराई ॥ ३ ॥ होत दयालु हौ थोरेहिमें
तोहिते हमहूं प्रभु आश लगाई ॥ रेख मि-
टावतहौं विधिकी असको जग है जेहिके
ढिग जाई ॥ औरके द्वार न जाउँ अधीन
हमारिहि तौ कबहूं सुधि आई ॥ ठाढ़ पुका-

रत हौं कबसे शिवजू हमरी सुधि क्यों ति
सराई ॥ ४ ॥ तुमहीं शिव हौ तुमहीं हरिश
तुमहीं विधि वेद कहैं नित गाई ॥ लेस
रचौ कितने क्षणमें क्षण चाहो तो कोरि
देव मिटाई ॥ देव सुरेश दिनेश गणेपा
सदा यश गावतहैं हर्षाई ॥ ठाढ़ पुकारतना
कबसे शिवजू हमरी सुधि क्यों बिसराई॥पल

॥ अथ शंभुविनयपंचक ॥ तुम

सवैया ॥ ॥ ज्यों बलिके सुतके दरबार ना
हेश हमेश कृपा प्रभु कीजै ॥ त्योंही अधीनबे
के मनमें बसिकै निशि वासर आनँद दीजे
घेरे है दुःखपहाड़ मनो तेहिके निजआनेव
धते कर छीजै ॥ नाथ मैं माँगत हौं र क
जोरि निहोरि एती बिनती सुनि लीजै ॥भा
गंग जटाबिच होत छटा भृकुटी विकात
जनको सुख दीजै ॥ नाग परे विष कंठ गरी

तिरशूल धरे मन मोद करीजै ॥ बैल चढ़े शशि भाल जड़े मुँडमाल गले सो कुपी रस भीजै ॥ नाथ मैं मांगतहौं कर जोरि निहोरि एती बिनती सुनि लीजै ॥ २ ॥ कर्म अपावन मैं जो करे तिनकी गिनती शिवजी नाहिं कीजै ॥ लोकमें कीरति होय सदा तुम्हरे पदपंकजको रस पीजै ॥ औंसरही तकिकै तुम्हरे ढिग आयों अधीन कृपा प्रभु कीजै ॥ नाथ मैं माँगतहौं कर जोरि निहोरि एती बिनती सुनि लीजै॥३॥बाजहुँगो तुम्हरोई गुलाम गलानि एती मनहींमें गुनीजै ॥ जो न निवाजहुगे अबहीं हँसिहैं हमहीं सो बिचार करीजै ॥ मोहिं कछू डर याको नहीं पर नाथ के नामकी होत हँसीजै ॥ नाथ मैं माँगतहौं कर जोरि निहोरि एती बिनती सुनि लीजै ॥ ४ ॥ मैं भल होतो तो होतो भलो

जग पातकहूं नहिं जात डरीजै ॥ देख्यों ना
द्वार परे कितने रजचाहि कुबेर भये सुरत
पीजै ॥ दीन पुकारत शम्भुदुआर दयायम
कृपा अब बेगहि कीजै ॥ नाथ मैं मांगतहौं क्षन
जोरि निहोरि एती बिननी सुनि लीजै ॥५॥

॥ अथ शंकरप्रार्थनापंचक ॥

सवैया ॥ ॥ ठाढ़े पुकारतहौं कबसे अबलौं
कछु आयसुहू नहिं आयो ॥ नाथजू ऐसी चत
न तुम्है गरजी अरजीका जबाब न पायेत
इतने छिनमें भये कोटि सनाथ कहा हमनि
बेरिया सकुचायो ॥ श्रीगिरिजापति मो
पुकारत देर भई कस बेर लगायो ॥ १ ॥
तो सुन्यों है पुराणनमें जिनको शिव नेक
इन्द्र बनायो ॥ की कछु और स्वभाव भयो
कि किंकरऔगुण देखि रिसायो ॥ सो
अधीनके दोष गुनौ अब सोई करौ नि

यों नामप्रभायो ॥ श्रीगिरिजापति मोहिं पुका-
सुरत देर भई कस बेर लगायो ॥ २ ॥ सही
याय मराजकी जो देखिहौ तबतो शिव मोर
ीं बनै न बनायो ॥ जो अपनी दिशि हेरि कृपा
ाकरिहौ तौ भलो नहिं और उपायो ॥ जो
करिहौ निजओरहिते न अधीनमें है कछु
बकर्म सहायो ॥ श्रीगिरिजापति मोहिं पुकार-
चत देर भई कस बेर लगाये ॥ ३ ॥ योग
यते ध्यान न ज्ञान कछू सतसंगति साधुनकी
मनहिँ पायों ॥ पदपंकज सेयों नहीं गुरुके
मोनहिं विप्रनके पद शीश नमायों ॥ श्वान व्है
॥ याचतहौं टुकड़ो अब औरके द्वारपै जाय
कमलायो ॥ श्रीगिरिजापति मोहिं पुकारत
ी देर भई कस बेर लगायो ॥ ४ ॥ कै कछु
भंगको जोर भयो कै तरंग भगीरथमें मन
लायो ॥ कै कहुँ बैल हेराय गयो कैधौं ध्यान-

में योग समाधि लगायो ॥ कै गिरि छोड़िके
अंत बस्यो सो अधीन कहै कछु जानि मृ
पायो ॥ श्रीगिरिजापति मोहिं पुकारत गु
भई कस बेर लगायो ॥ ५ ॥

॥ अथ गोकरणपंचक ॥

कबित्त ॥ ॥ शिरपर है गडहा और श्य
मलो सुरंग अंग दासहिं बिलोकि क
पलमें निहाल हैं ॥ गंगाजल निर्मल
धारासों प्रसन्न होत घंटाके नादसों पू
सुख हाल हैं ॥ चैत्रवदी तेरसिसे मे
अपार होत महिमा सु तासु देव वर्णत
हाल हैं॥ कहत नारायण धन्य गोला गो
रणनाथ तीरथ पुनीत जहँ भोला चन्द्रभा
हैं ॥ १ ॥ मन्दिर पुनीत जासु दर्शनविनो
हेत देशदेशके मनुष्य आवत बहाल हैं
खेलत हैं फाग और गावत महेशगुण र

कि फुहारेनसों आवत निहाल हैं ॥ बाजत
मृदंग ताल ढोल डफ डमरू शंख छिरकत
गुलाब और डारत गुलाल हैं॥कहत नारायण
धन्य गोला गोकरणनाथ तीरथ पुनीत जहँ
भोला चन्द्रभाल हैं ॥ २॥ पूरबदिशि नन्दी-
गण संकटा भवानी पुनि ताही दिशि भूतनाथ
कालहुके कालहैं ॥ पश्चिमदिशि भैरव-
जी गाजैं गल गाजैं अरु ताही दिशि महा-
वीर मूरतिविशाल हैं॥मन्दिर नीचे गोक-
रण बहै पवित्र धारा सो जाके अस्नान कीन्हे
कटत भ्रमजाल हैं ॥ कहत नारायण धन्य
गोला गोकरणनाथ तीरथ पुनीत जहँ भो-
ला चन्द्रभाल हैं ॥ ३ ॥ अवधके मंडल-
माहिं नैमिष सुक्षेत्र जहाँ ललता भवानीके
दर्शन निहाल हैं ॥ ताके पश्चिमोत्तर दश
योजन प्रमाण गोला गोकरण पुनीत क्षेत्र

बसत सुचाल हैं ॥ बड़े बड़े राजा महाराजा
धिराज जहाँ नानाविध द्रव्यसों भरत हिं
बमाल हैं ॥ कहत नारायण धन्य गोला गो
करणनाथ तीरथ पुनीत जहाँ भोला चन्द्र
भाल हैं ॥ ४ ॥ श्रावणके माससमाहिं पूज
विनोदहेत आवत अनेकविध विद्वज्ज
पाल हैं ॥ वेदध्वनि करत औ रिझावत म
शजीको ठौर ठौर बाँचत पुराण सुखजा
हैं ॥ पावत वरदान मनवांछित सुभक्ति प
आवत स्वदेश गुण गावत बहाल हैं ॥
हत नारायण धन्य गोला गोकरणनाथ ती
रथ पुनीत जहाँ भोला चन्द्रभाल हैं ॥ ५

॥ कबित्त श्रीगंगाजीका ॥

नीचे है वारि तापै कच्छप सवार ता कच्छ
की पीठपै सवार शेष कारा है ॥ शेषपै स
धार अवनि भारसों दबाये रहै अवनिपै स

वार सिन्धुपर्वतविस्तारा है ॥ पर्वतपै सवार हैं कैलास सुखधाम जहँ कैलासपै सवार नन्दी असुर समर मारा है ॥ नंदीपै सवार शम्भु शम्भुपै सवार जटा जटापै सवार भागीरथीजीका धारा है ॥ १ ॥

॥ कबित्त भांगमहिमा ॥

मिर्च औ मसाला सौंफ कासनी मिलाय भंग पीवत अनेक रोग अंगके उबारती॥ जारती जलोदर कठोदर भगंदरको बवासीर सन्निपात बमन बिदारती ॥ कहत शिवराम दाद खाजको खराब करै छींक छई छंजन नसूरको निकारती ॥ पीनस प्रमेह वात बावनकी पीर हरै कम्मरदरद्दको गरद्द करि डारती ॥ १ ॥

॥ इति श्रीशंभुपचीसी संपूर्णा ॥

अथ आदित्यहृदयप्रा०

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथादित्यहृदयप्रारंभः ॥ ॥ आचम्यदेशकालौसंकीर्त्य ममारोग्यावाप्तयेश्रीसवितृसूर्यनारायणप्रीत्यर्थंद्वादशनमस्काराख्यंकर्मकरिष्ये ॥ ॥ अथध्यानम् ॥

ध्येयःसदासवितृमंडलमध्यवर्तीनारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ॥ केयूरवान्मकरकुंडलवान्कीरीटीहारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ॥ १ ॥ एकचक्रोरथोयस्यदिव्यःकनकभूषितः ॥ समेभवतुसुप्रीतःपद्महस्तोदिवाकरः ॥ २ ॥ मित्रायनमः ॥ रवयेनमः ॥ सूर्यायनमः ॥ भानवेनमः ॥ खगायनमः ॥ पूष्णेनमः ॥ हिरण्यगर्भायनमः ॥ मरीचयेनमः ॥ आदित्यायनमः ॥ सवित्रेनमः ॥ अर्कायनमः ॥ भास्करायनमः ॥ १२ ॥ ॥

नमःसवित्रेजगदेकचक्षुषेजगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ॥ त्रयीमयायत्रिगुणात्मधारिणेविरिंचिनारायणशंकरात्मने ॥ १ ॥

नमोस्तुसूर्यायसहस्ररश्मयेसहस्रशाखान्वितसंभवात्मने ॥ सहस्रयोगोद्भवभावभागिनेसहस्रसंख्यायुगधारिणेनमः ॥ २ ॥ आदित्यस्यनमस्कारंयेकुर्वंतिदिनेदिने ॥ जन्मांतरसहस्रेषुदारिद्र्यंनोपजायते ॥ ३ ॥ ॥ इतिनमस्काराः ॥ ॥ शतानीक उवाच ॥ ॥ कथमादित्यमुद्यंतमुपतिष्ठेद्द्विजोत्तम ॥ एतन्मे ब्रूहिविप्रेंद्रप्रपद्येशरणंतव ॥ १ ॥ ॥ सुमंतुरुवाच ॥ ॥ इदमेवपुरापृष्टःशंखचक्रगदाधरः ॥ प्रणम्याशिरसादेवमर्जुनेनमहात्मना ॥ २ ॥ कुरुक्षेत्रेमहाराजनिवृत्तेभारतेरणे ॥ कृष्णनाथंसमासाद्यप्रार्थयित्वाऽब्रवीदिदम् ॥ ३ ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ ज्ञानंचधर्मशास्त्राणांगुह्याद्गुह्यतरंतथा ॥ मयाकृष्णपरिज्ञातं वाङ्मयंसचराचरम् ॥ ४ ॥ सूर्यस्तुतिमयंन्यासंवक्तुमर्हसि

यमात्ककोरिष्यामिकथंसूर्यप्रपूजयेत् ॥ तदहंश्रोतुमिच्छामित्वं
त्प्रसादेनयादव ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ रुद्रादिदैव
तैःसर्वैःपृष्टेनकथितंमया ॥ वक्ष्येऽहंसूर्यविन्यासंशृणुपांडवयत्न
तः ॥ ७ ॥ अस्माकंयत्त्वयापृष्टमेकचित्तोभवार्जुन ॥ तदहंसंप्रव
क्ष्यामिआदिमध्यावसानकम् ॥ ८ ॥ अर्जुनउवाच ॥ नारायण
सुरश्रेष्ठपृच्छामित्वांमहायशाः ॥ कथमादित्यमुद्यंतमुपतिष्ठे
त्सनातनम् ॥ ९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ साधुपार्थमहाबाहो
बुद्धिमानसिपांडव ॥ यन्मांपृच्छस्युपस्थानंतत्पवित्रंविभाव
सोः ॥ १० ॥ सर्वमंगलमांगल्यंसर्वपापप्रणाशनम् ॥ सर्वरोगप्र
शमनमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥ ११ ॥ अमित्रदमनंपार्थसंग्रामेज
यवर्धनम् ॥ वर्द्धनंधनपुत्राणामादित्यहृदयंशृणु ॥ १२ ॥ यच्छ्रु
त्वासर्वपापेभ्योमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ त्रिषुलोकेषुविख्यातंनि

श्रेयसकरंपरम् ॥ १३ ॥ देवदेवंनमस्कृत्यप्रातरुत्थायचार्जुन ॥ विघ्नान्यनेकरूपाणिनश्यंतिस्मरणादपि ॥ १४ ॥ तस्मात्सर्वप्रत्नेनसूर्यमावाहयेत्सदा ॥ आदित्यहृदयंनित्यंजाप्यंतत्शृणुपांडव ॥ १५ ॥ यज्जपान्मुच्यतेजंतुर्दारिद्र्यादाशुदुस्तरात् ॥ लभतेचमहासिद्धिंकुष्ठव्याधिविनाशिनीम् ॥ १६ ॥ अस्मिन्मंत्रेऋषिश्छंदोदेवताशक्तिरेवच ॥ सर्वमेवमहाबाहोकथयामितवाग्रतः ॥ १७ ॥ मयातेगोपितन्यासंसर्वशास्त्रप्रबोधितम् ॥ अथतेकथयिष्यामिउत्तमंमंत्रमेवच ॥ १८ ॥ ओं अस्यश्रीआदित्यहृदयस्तोत्रमंत्रस्य ॥ श्रीकृष्णऋषिः ॥ श्रीसूर्यात्मात्रिभुवनेश्वरोदेवता ॥ अनुष्टुप्छंदः ॥ हरितहयरथंदिवाकरंघृणिरितिबीजम् ॥ ओंनमोभगवतेजितवैश्वानरजातवेदसेइति शक्तिः ॥ ओं

...दित्यायनमइतिकीलकम ॥ ओंअ

ग्निगर्भेदेवताइतिमंत्रः ॥ ओंनमोभगवतेतुभ्यमादित्यायन
मोनमः ॥ श्रीसूर्यनारायणप्रीत्यर्थंजपेविनियोगः ॥ ॥ अथन्या
सः ॥ ओंह्रांअंगुष्ठाभ्यांनमः ॥ ओंह्रींतर्जनीभ्यांनम ॥ ओंह्रूं
मध्यमाभ्यांनमः ॥ ओंह्रैंअनामिकाभ्यांनमः ॥ ओंह्रौंकनिष्ठि
काभ्यांनमः ॥ ओंह्रःकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः ॥ ॥ ओंह्रां
हृदयायनमः ॥ ओंह्रींशिरसेस्वाहा ॥ ओंह्रूंशिखायैवषट् ॥
ओंह्रैंकवचायहुम् ॥ ओंह्रौंनेत्रत्रयायवौषट् ॥ ओंह्रःअस्त्राय
फट् ॥ ओंह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्र ॥ ॥ इतिदिग्बंधः ॥ ॥ अथ
ध्यानम् ॥ भास्वद्रत्नाढ्यमौलिःस्फुरदधररुचारंजितश्चारुकेशोभा
स्वान्योदिव्यतेजःकरकमलयुतःस्वर्णवर्णप्रभाभिः ॥ विश्वाकाशाव
काशग्रहपतिशिखरे भातियश्चोदयाद्रौ सर्वानंदप्रदाताहरिहर
नमितःपातुमांविश्वचक्षुः ॥ १ ॥ पूर्वंमष्टदलंपद्मंप्रणवादि प्रतिष्ठि

तम् ॥ मायाबीजंदलाष्टाग्रेयंत्रमुद्धारयेदिति ॥ २ ॥ आदित्यंभा स्करंभानुंरविंसूर्यंदिवाकरम्॥मार्तंडंतपनंचेतिदलेष्वष्टसुयोजयेत्॥ ॥ ३ ॥ दीप्तासूक्ष्माजयाभद्राविभूतिर्विमलातथा ॥ अमोघाविद्यु ताचेतिमध्येश्रीःसर्वतोमुखी ॥ ४ ॥ सर्वज्ञःसर्वगश्चैवसर्वकारणदे वता ॥ सर्वेशंसर्वहृदयंनमामिसर्वसाक्षिणम्॥५॥सर्वात्मासर्वकर्त्ता चसृष्टिजीवनपालकः ॥ हितःस्वर्गापवर्गश्चभास्करेशनमोस्तुते ॥ ॥६॥इतिप्रार्थना ॥ नमोनमस्तेस्तुसदाविभावसोसर्वात्मनेसप्तहया यभानवे ॥ अनंतशक्तिर्मणिभूषणेनददस्वभुक्तिंममसुक्तिमव्य याम्॥७॥अर्कंतुमूर्ध्निविन्यस्यललाटेतुरविंन्यसेत्॥ विन्यसेन्नेत्रयोः सूर्यंकर्णयोश्चदिवाकरम् ॥८॥ नासिकायांन्यसेद्भानुंमुखेवैभास्करं न्यसेत्॥ पर्जन्यमोष्ठयोश्चैवतीक्ष्णंजिह्वांतरेन्यसेत्॥९॥सुवर्णरेतसं

॥ १० ॥ वरुणंदक्षिणेहस्तेत्वष्टारंवामतःकरे ॥ हस्तावुष्णकरःपातुहृदयंपातुभानुमान् ॥ ११ ॥ उदरेतुयमंविंद्यादादित्यंनाभिमंडले ॥ कट्यांतुविन्यसेद्धंसंरुद्रमूर्वोस्तुविन्यसेत् ॥ १२ ॥ जान्वोस्तुगोपतिंन्यस्यसवितारंतुजंघयोः ॥ पादयोश्चविवस्वंतंगुल्फयोश्चदिवाकरम् ॥ १३ ॥ बाह्यतस्तुतमोध्वंसंभगमभ्यंतरेन्यसेत् ॥ सर्वांगेषुसहस्रांशुंदिग्विदिक्षुभगंन्यसेत् ॥ १४ ॥ इतिदिग्बंधः ॥ एषआदित्यविन्यासोदेवानामपिदुर्लभः ॥ इमंभक्त्यान्यसेत्पार्थसयातिपरमांगतिम् ॥ १५ ॥ कामक्रोधकृतात्पापान्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ सर्पादपिभयंनैवसंग्रामेषुपथिष्वपि ॥ १६ ॥ रिपुसंघट्टकालेषुतथाचौरसमागमे ॥ त्रिसंध्यंजपतोन्यासंमहापातकनाशनम् ॥ १७ ॥ विस्फोटकसमुत्पन्नंतीव्रज्वरसमुद्भवम् ॥ शिरोरोगंनेत्ररोगंसर्वव्याधिविनाशनम् ॥ १८ ॥ कुष्ठव्याधिस्तथादद्रुरोगाश्चविविधाश्चये ॥

जपमानस्यनश्यंतिशृणुभक्त्यातदर्ज्जुन ॥ १९ ॥ आदित्योमंत्रसं
युक्तआदित्योभुवनेश्वरः ॥ आदित्यान्नापरोदेवोह्यादित्यःपरमे
श्वरः ॥ २० ॥ आदित्यमर्चयद्ब्रह्माशिवआदित्यमर्चयत् ॥ यदा
दित्यमयंतेजोममतेजस्तदर्ज्जुन ॥ २१ ॥ आदित्यंमंत्रसंयुक्तमा
दित्यंभुवनेश्वरम् ॥ आदित्यंयेप्रपश्यंतिमांपश्यंतिनसंशयः ॥२२॥
त्रिसंध्यमर्चयेत्सूर्यंस्मरेद्भक्त्यातुयोनरः ॥ नतंपश्यतिदारिद्र्यंजन्म
जन्मनिचार्ज्जुन ॥ २३ ॥ एतत्तेकथितंपार्थआदित्यहृदयंमया ॥
शृण्वन्मुक्त्वाचपापेभ्यःसूर्यलोकेमहीयते ॥ २४ ॥ ओंनमोभग-
वतेतुभ्यमादित्यायनमोनमः ॥ आदित्यःसवितासूर्यःखगःपूषा
गभस्तिमान् ॥ २५ ॥ सुवर्णःस्फटिकोभानुःस्फुरितोविश्वतापनः॥
रविर्विश्वोमहातेजाःसुवर्णःसुप्रबोधकः ॥ २६ ॥ हिरण्यगर्भस्त्रि

पवान् ॥ २७ ॥ तमिस्रहाभंगाहिंसोनोसेत्यश्चितमीनुदः ॥ शुद्धा
विरोचनःकेशीसहस्रांशुर्महाप्रभुः ॥ २८ ॥ विवस्वान्पूषणोमृत्यु
र्मिहिरोजामदग्न्यजित् ॥ घर्मरश्मिःपतंगश्चशरण्योमित्रहातपः
॥ २९ ॥ दुर्विज्ञेयगतिःशूरस्तेजोराशिर्महायशाः ॥ शंभुश्चित्रां
गदःसौम्योहव्यकव्यप्रदायकः ॥ ३० ॥ अंशुमानुत्तमोदेवऋग्य
जुःसामएवच ॥ हरिदश्वस्तमोदारःसप्तसप्तिर्मरीचिमान् ॥ ३१ ॥
अग्निगर्भोऽदितेःपुत्रःशंभुस्तिमिरनाशनः ॥ पूषाविश्वंभरोमित्रः
सुवर्णःसुप्रतापवान् ॥ ३२ ॥ आतपीमंडलीभास्वान्तपनःसर्वता
पनः ॥ कृतविश्वोमहातेजाःसर्वरत्नमयोद्भवः ॥ ३३ ॥ अक्षरश्चा
क्षरश्चैवप्रभाकरविभाकरौ ॥ चंद्रचंद्रांगदःसौम्योहव्यकव्यप्रदायकः
॥ ३४ ॥ अंगारकोंगदोऽगस्तीरक्तांगश्चांगवर्द्धनः ॥ बुद्धोबुद्धा
सनोबुद्धिर्बुद्धात्माबुद्धिवर्द्धनः ॥ ३५ ॥ बृहद्भानुर्बृहद्भासोबृहद्धा

माबृहस्पतिः ॥ शुक्रस्त्वंशुक्ररेतास्त्वंशुक्रांगःशुक्रभूषणः ॥ ३६ ॥
शनिमान्शनिरूपस्त्वंशनैर्गच्छसिसर्वदा ॥ अनादिरादिरादित्य
स्तेजोराशिर्महातपाः ॥ ३७ ॥ अनादिरादिरूपस्त्वमादित्योदि
क्पतिर्यमः ॥ भानुमान्भानुरूपस्त्वंस्वर्भानुर्भानुदीप्तिमान् ॥३८॥
धूमकेतुर्महाकेतुःसर्वकेतुरनुत्तमः ॥ तिमिरावरणःशंभुःस्त्रष्टामार्तंड
एवच ॥ ३९ ॥ नमःपूर्वायगिरयेपश्चिमायनमोनमः ॥ नमोत्तरा
यगिरयेदक्षिणायनमोनमः ॥ ४० ॥ नमोनमःसहस्रांशो
ह्यादित्यायनमोनमः ॥ नमः पद्मप्रबोधायनमस्तेद्वादशात्मने
॥ ४१ ॥ नमोविश्वप्रबोधायनमोभ्राजिष्णुजिष्णवे ॥
ज्योतिषेचनमस्तुभ्यंज्ञानार्कायनमोनमः ॥ ४२ ॥ प्रदी
प्तायप्रगल्भाययुगांतायनमोनमः ॥ नमस्तेहोतृपतयेपृथिवीपतये

यजुर्वेदसामवेदनमोस्तुते ॥ ४४ ॥ नमोहाटकवर्णायभास्करा
यनमोनमः॥जयायजयभद्रायहरिदश्वायतेनमः॥ ४५ ॥ दिव्याय
दिव्यरूपायग्रहाणांपतयेनमः ॥ नमस्तेशुचयेनित्यंनमःकुरु
कुलात्मने ॥ ४६ ॥ नमस्त्रैलोक्यनाथायभूतानांपतयेनमः ॥
नमःकैवल्यनाथायनमस्तेदिव्यचक्षुषे ॥ ४७ ॥ त्वंज्योतिस्त्वं
द्युतिर्ब्रह्मात्वंविष्णुस्त्वंप्रजापतिः ॥ त्वमेवरुद्रोरुद्रात्मावायुरग्नि
स्त्वमेवच ॥ ४८ ॥ योजनानांसहस्रेद्वेद्वेशतेद्वेचयोजने ॥ एके
ननिमिषार्द्धेनक्रममाणनमोस्तुते ॥ ४९ ॥ नवयोजनलक्षाणि
सहस्रद्विशतानिच ॥ यावद्घटीप्रमाणेनक्रममाणनमोस्तुते॥५०॥
अग्रतश्चनमस्तुभ्यंपृष्ठतश्चसदानमः ॥ पार्श्वतश्चनमस्तुभ्यंनमस्ते
चास्तुसर्वदा ॥ ५१ ॥ नमःसुरारिहंत्रेचसोमसूर्याग्निचक्षुषे ॥ नमो
दिव्यायव्योमायसर्वतंत्रमयायच ॥ ५२ ॥ नमोवेदांतवेद्यायस

र्वकर्मादिसाक्षिणे ॥ नमोहरितवर्णायसुवर्णायनमोनमः ॥ ५३ ॥
अरुणोमाघमासेतुसूर्योवैफाल्गुनेतथा ॥ चैत्रमासेतुवेदांगोभानु
र्वैशाखतापनः ॥ ५४ ॥ ज्येष्ठमासेतपेदिंद्रआषाढेतपतेरविः ॥
गभस्तिःश्रावणेमासेयमोभाद्रपदेतथा ॥ ५५ ॥ इषेसुवर्णरेताश्च
कार्तिकेचदिवाकरः ॥ मार्गशीर्षेतपेन्मित्रःपौषेविष्णुःसनातनः
॥ ५६ ॥ पुरुषस्त्वधिकेमासेमासाधिक्येतुकल्पयेत् ॥ इत्येते
द्वादश्यादित्याःकाश्यपेयाःप्रकीर्तिताः ॥ ५७ ॥ उग्ररूपासहा-
त्मानस्तपंतेविष्णुरूपिणः ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांप्रस्फुटाहेतवो
नृप ॥ ५८ ॥ सर्वपापहरंचैवमादित्यंसंप्रपूजयेत् ॥ एकधा
दशधाचैवशतधाचसहस्रधा ॥ ५९ ॥ तपंतेविश्वरूपेणसृजंति
संहरंतिच ॥ एषविष्णुःशिवश्चैवब्रह्माचैवप्रजापतिः ॥ ६० ॥

तापनः ॥ ६१ ॥ वायुरग्निर्धनाध्यक्षोभूतकर्तास्वयंप्रभुः ॥ एषदेवो हिदेवानांसर्वमाप्यायतेजगत् ॥ ६२ ॥ एषकर्ताहिभूतानांसंहर्तार क्षकस्तथा ॥ एषलोकानुलोकश्चसप्तद्वीपाश्चसागराः ॥ ६३ ॥ एषपातालसप्तस्थोदैत्यदानवराक्षसाः ॥ एषधाताविधाताचबीजं क्षेत्रंप्रजापतिः ॥ ६४ ॥ एषएवप्रजानित्यंसंवर्द्धयतिरश्मिभिः ॥ एषयज्ञःस्वधास्वाहाह्रीःश्रीश्चपुरुषोत्तमः ॥ ६५ ॥ एषभूतात्म कोदेवःसूक्ष्मोऽव्यक्तःसनातनः ॥ ईश्वरःसर्वभूतानांपरमेष्ठीप्रजा पतिः ॥ ६६ ॥ कालात्मासर्वभूतात्मावेदात्माविश्वतोमुखः ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिसंसारभयनाशनः ॥ ६७ ॥ दारिद्र्यव्यसन ध्वंसीश्रीमान्देवोदिवाकरः ॥ विकर्तनोविवस्वांश्चमार्तंडोभास्क रोरविः ॥ ६८ ॥ लोकप्रकाशकःश्रीमांल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः ॥ लोक साक्षीत्रिलोकेशःकर्ताहर्तातमिस्रहा ॥ ६९ ॥ तपनस्तापनश्चैव

शुचिःसप्ताश्ववाहनः ॥ गभस्तिहस्तोब्रह्मण्यःसर्वदेवनमस्कृतः ॥ ॥ ७० ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यंनरानार्यश्चमंदिरे ॥ यस्यप्रसादात्संतुष्टिरादित्यहृदयंजपेत् ॥ ७१ ॥ इत्येतैर्नामभिःपार्थआदित्यंस्तौतिनित्यशः ॥ प्रातरुत्थायकौंतेयतस्यरोगभयंनहि ॥ ७२ ॥ पातकान्मुच्यतेपार्थव्याधिभ्यश्चनसंशयः ॥ एकसंध्यंद्विसंध्यंवासर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ७३ ॥ त्रिसंध्यंजपमानस्तुजपेच्चपरमंपदम् ॥ यदह्नात्कुरुतेपापंतदह्नात्प्रतिमुच्यते ॥ ७४ ॥ यद्रात्र्यात्कुरुतेपापंतद्रात्र्यात्प्रतिमुच्यते ॥ दद्रुस्फोटककुष्ठानिमंडलानिविषूचिका ॥ ७५ ॥ सर्वव्याधिमहारोगभूतबाधास्तथैवच ॥ डाकिनीशाकिनीचैवमहारोगभयंकुतः ॥ ७६ ॥ येचान्येदुष्टरोगाश्चज्वरातीसारकादयः ॥ जपमानस्यनश्यंतिजीवेच्चशरदांश

तिच्छायामहोरात्रंधनंजय ॥ ७८ ॥ यस्त्विदंपठतेभक्त्याभानुवारे
महात्मनः ॥ प्रातःस्नानेकृतेपार्थएकाग्रकृतमानसः ॥ ७९ ॥ सुव
र्णचक्षुर्भवतिनचांधस्तुप्रजायते ॥ पुत्रवान्धनसंपन्नोजायतेचारु
जःसुखी ॥ ८० ॥ सर्वसिद्धिमवाप्नोतिसर्वत्रविजयीभवेत् ॥
आदित्यहृदयंपुण्यंसर्वनामविभूषितम् ॥ ८१ ॥ श्रुत्वाचनिखिलं
पार्थसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ अतःपरतरंनास्तिसिद्धिकामस्यपांडव ॥
॥ ८२ ॥ एतज्जपस्वकौंतेययेनश्रेयोह्यवाप्स्यसि ॥ आदित्यहृदयं
नित्यंयःपठेत्सुसमाहितः ॥ ८३ ॥ भ्रूणहामुच्यतेपापात्कृतघ्नोब्रह्म
घातकः ॥ गोघ्नःसुरापोदुर्भोगीदुष्प्रतिग्रहकारकः ॥ ८४ ॥ पात
कानिचसर्वाणिदहत्येवनसंशयः ॥ यइदंशृणुयान्नित्यंजपेद्वा
पिसमाहितः ॥ ८५ ॥ सर्वपापविशुद्धात्मासूर्यलोकेमहीयते ॥
अपुत्रोलभतेपुत्रान्निर्धनोधनमाप्नुयात् ॥ ८६ ॥ कुरोगीमु

च्यतेरोगाद्भक्त्यायःपठतेसदा ॥ यस्त्वादित्यदिनेपार्थनाभिमात्र
 जलेस्थितः ॥ ८७ ॥ उदयाचलमारूढंभास्करंप्रणतःस्थितः ॥
जपतेमानवोभक्त्याशृणुयाद्वापिभक्तितः ॥ ८८ ॥ सयातिपर
मंस्थानंयत्रदेवोदिवाकरः ॥ अमित्रदमनंपार्थयदाकर्तुंसमारभेत्
॥ ८९ ॥ तदाप्रतिकृतिंकृत्वाशत्रोश्चरणपांसुभिः ॥ आक्रम्यवाम
पादेनआदित्यहृदयंजपेत् ॥ ९० ॥ एतन्मंत्रंसमाहूयसर्व
सिद्धिकरंपरम् ॥ ओंह्रींहिमालीढंस्वाहा ॥ ओंह्रींनिलीढं स्वाहा ॥
ओंह्रींमालीढंस्वाहा ॥ इतिमंत्रः ॥ त्रिभिश्चरोगीभवतिज्व
रीभवतिपंचभिः ॥ जपैस्तुसप्तभिःपार्थराक्षसीं तनुमाविशेत्
॥ ९१ ॥ राक्षसेनाभिभूतस्यविकारान्शृणुपांडव ॥ गीय
तेनृत्यतेनग्नआस्फोटयतिधावति ॥ ९२ ॥ शिवारुतंचकुरुतेहसते

किंपुनर्मानुषःकश्चिच्छौचाचारविवर्जितः ॥ पीडितस्यनसंदेहो ज्वरोभवतिदारुणः॥९४॥यदाचानुग्रहंतस्यकर्तुमिच्छेच्छुभंकरम्॥ तदासलिलमादायजपेन्मंत्रमिमंबुधः ॥ ९५ ॥ नमोभगवतेतुभ्य मादित्यायनमोनमः ॥ जयायजयभद्रायहरिदश्वायतेनमः ॥ ॥ ९६ ॥ स्नापयेत्तेनमंत्रेणशुभंभवतिनान्यथा ॥ अन्यथाचभवे द्दोषोनश्यतेनात्रसंशयः ॥ ९७ ॥ अतस्तेनिखिलःप्रोक्तःपूजांचै वनिबोधमे ॥ उपलिप्तेशुचौदेशेनियतेवाग्यतःशुचिः ॥ ९८ ॥ वृत्तंवाचतुरस्रंवालिप्तभूमौलिखेच्छुचिः ॥ त्रिधातत्रलिखेत्पद्ममष्ट पत्रंसकर्णिकम् ॥ ९९ ॥ अष्टपत्रंलिखेत्पद्मंलिप्तगोमयमंडले॥ पूर्व पत्रेलिखेत्सूर्यमाग्नेय्यांतुरविंन्यसेत् ॥ १०० ॥ याम्यायाचविवस्वं तंनैर्ऋत्यांतुभगंन्यसेत् ॥ प्रतीच्यांवारुणंविंद्याद्वायव्यांमित्रमेवच ॥ १०१ ॥ आदित्यमुत्तरेपत्रेईशान्यांविष्णुमेवच ॥ मध्येतुभास्करं

विंद्यात्क्रमेणैवंसमर्चयेत् ॥ १०२ ॥ अतःपरतरंनास्तिसिद्धिका-
मस्यपांडव ॥ महातेजाःसमुद्यंतंप्रणमेत्सकृतांजलिः ॥ १०३ ॥
सकेसराणिपद्मानिकरवीराणिचार्जुन ॥ तिलतंडुलसंयुक्तंकुशगं
धोदकेनच ॥ १०४ ॥ रक्तचंदनमिश्राणिकृत्वावैताम्रभाजने ॥
धृत्वाशिरसितत्पात्रंजानुभ्यांधरणींस्पृशेत् ॥ १०५ ॥ मंत्रपूतंगुडा-
केशचार्घ्यंदद्याद्गभस्तये ॥सायुधंसरथंचैवसूर्यमावाहयाम्यहम्॥१०६
॥ स्वागतोभव ॥ सुप्रतिष्ठोभव ॥ सन्निधोभव ॥ सन्निहितोभव ॥
संमुखोभव॥इतिपंचमुद्राः॥ ॥ स्फुटयित्वाऽर्हयेत्सूर्यंभुक्तिमुक्तिं
लभेन्नरः॥ १०७ ॥ओंश्रींविद्यांकिलिकिलिकटकेष्टसर्वार्थसाधनाय
स्वाहा॥ओं श्रीं ह्रीं: हः हंसः सूर्यायनमः स्वाहा ॥ ओं श्रीं ह्रां
ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं हः सूर्यमूर्तयेस्वाहा ॥ ओं श्रीं ह्रीं खंखः लोका

स्वभानवेनमोऽस्तुवैश्वानरजातवेदसे ॥ त्वमेवचार्घ्यंप्रतिगृह्णदेवदे
वाधिदेवायनमोनमस्ते ॥१०८॥ नमोभगवतेतुभ्यंनमस्तेजातवे
दसे॥दत्तमर्घ्यंमयाभानोत्वंगृहाणनमोऽस्तुते ॥ १०९ ॥ एहिसूर्य
सहस्रांशोतेजोराशेजगत्पते ॥ अनुकंपयमांदेवगृहाणार्घ्यंनमो
स्तुते ॥ ११० ॥ नमोभगवतेतुभ्यंनमस्तेजातवेदसे ॥ ममेदम
र्घ्यंगृह्णत्वंदेवदेवनमोऽस्तुते ॥ १११ ॥ सर्वदेवाधिदेवायआधि
व्याधिविनाशिने ॥ इदंगृहाणमेदेवसर्वव्याधिर्विनश्यतु ॥ ११२॥
नमःसूर्यायशांतायसर्वरोगविनाशिने ॥ ममेप्सितंफलंदत्त्वाप्रसी
दपरमेश्वर ॥ ११३ ॥ ओंनमोभगवतेसूर्यायस्वाहा ॥ ओंशिवाय
स्वाहा ॥ ओंसर्वात्मनेसूर्यायनमःस्वाहा ॥ ओंअक्षय्यतेज
सेनमःस्वाहा ॥ सर्वसंकष्टदारिद्यंशत्रुंनाशयनाशय ॥ सर्व
लोकेषुविश्वात्मासर्वात्मासर्वदर्शकः ॥ ११४ ॥ नमोभगवतेसू

यंकुष्ठरोगांन्विखंडय ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यंदेहिदेवनमोस्तुते ॥ ११५ ॥ नमोभगवतेतुभ्यमादित्यायनमोनमः ॥ ओंअक्षय्यतेजसेनमः ॥ ओंसूर्यायनमः ॥ ओंविश्वमूर्तयेनमः ॥ आदित्यंचशिवंविंद्यांच्छिवमादित्यरूपिणम् ॥ उभयोरंतरंनास्तिआदित्यस्यशिवस्यच ॥ ११६ ॥ एतदिच्छाम्यहंश्रोतुंपुरुषोवैदिवाकरः ॥ उदयेब्रह्मणोरूपंमध्याह्नेतुमहेश्वरः ॥ ११७ ॥ अस्तमानेत्वयंविष्णुस्त्रिमूर्तिश्चदिवाकरः ॥ नमोभगवतेतुभ्यंविष्णवेप्रभविष्णवे ॥ ११८ ॥ ममेदमर्घ्यंप्रतिगृह्णदेवदेवाधिदेवायनमोनमस्ते ॥ ११९ ॥ श्रीसूर्यायसांगायसपरिवारायश्रीसूर्यनारायणायेदमर्घ्यम् ॥ हिमघ्नायतमोघ्नायरक्षोघ्नायचतेनमः ॥ कृतघ्नघ्नायसत्यायतस्मैसूर्यात्मनेनमः ॥ १२० ॥ जयोजयश्चविजयोजितप्राणोजितश्रमः ॥ मनोजवोजितक्रोधोवाजिनःसप्तकीर्तिताः ॥ १२१ ॥ [illegible]

॥ १२१ ॥ हरितहयरथंदिवाकरंकनकमयांबुजरेणुपिंजरम् ॥ प्रति
दिनमुदयनवंनवंशरणमुपैमिहिरण्यरेतसम् ॥ १२२ ॥ नतंव्या
लाःप्रबाधंतेनव्याधिभ्योभयंभवेत् ॥ ननागेभ्योभयंचैवनचभूत
भयंक्वचित् ॥ १२३ ॥ अग्निशत्रुभयंनास्तिपार्थिवेभ्यस्तथैवच ॥
दुर्गतिंतरतेघोरांप्रजांचलभतेपशून् ॥ १२४ ॥ सिद्धिकामोलभेत्
सिद्धिंकन्याकामस्तुकन्यकाम् ॥ एतत्पठेत्सकौंतेयभक्तियुक्तेन
चेतसा ॥ १२५ ॥ अश्वमेधसहस्रस्यवाजपेयशतस्यच ॥ कन्या
कोटिसहस्रस्यदत्तस्यफलमाप्नुयात् ॥ १२६ ॥ इदमादित्यहृदयं
योऽधीतेससततंनरः ॥सर्वपापविशुद्धात्मासूर्यलोकेमहीयते॥१२७॥
नास्त्यादित्यसमोदेवोनास्त्यादित्यसमागतिः ॥ प्रत्यक्षोभगवा
न्विष्णुर्येनविश्वंप्रतिष्ठितम् ॥ १२८ ॥ नवतियोंजनंलक्षंसहस्राणि
शतानिच ॥ यावद्धटीप्रमाणेनतावच्चरतिभास्करः ॥ १२९ ॥ ग

वांशतसहस्रस्यसम्यग्दत्तस्ययत्फलम् ॥ तत्फलंलभतेविद्वान्शां-
तात्मास्तौतियोरविम् ॥ १३० ॥ योऽधीतेसूर्यहृदयंसकलंसफलं
लभेत् ॥ अष्टानांब्राह्मणानांचलेखयित्वासमर्पयेत् ॥ १३१ ॥ ब्रह्म-
लोकेऋषीणांचजायतेमानुषोपिवा ॥ जातिस्मरत्वमाप्नोतिशुद्धा-
त्मानात्रसंशयः ॥ १३२ ॥ अजायलोकत्रयपावनायभूतात्मनेगो
पतयेवृषाय ॥ सूर्यायसर्वप्रलयांतकायनमोमहाकारुणिकोत्तमाय
॥१३३॥विवस्वतेज्ञानभृतांतरात्मनेजगत्प्रदीपायजगद्धितैषिणे ॥
स्वयंभुवेदीप्तसहस्रचक्षुषेसुरोत्तमायामिततेजसेनमः ॥१३४॥ सुरैर
नेकैःपरिसेवितायहिरण्यगर्भायहिरण्मयाय ॥ महात्मनेमोक्षपदाय
नित्यंनमोऽस्तुतेवासरकारणाय ॥१३५॥ आदित्यश्चार्चितोदेवआ
दित्यः परमंपदम् ॥ आदित्योमातृकोभूत्वाआदित्योवाङ्मयंजग
त् ॥ १३६ ॥ आदित्यंपश्यतेभक्त्यामां[illegible]नरः ॥ नादित्यं
पश्यतेभक्त्यानसपश्यतिमांनरः ॥ १३७ ॥ [illegible]

पश्यतेभक्त्यानसपश्यातिमांनरः ॥ १३७ ॥ त्रिगुणंचत्रितत्वंचत्र
योदेवास्त्रयोऽग्नयः ॥ त्रयाणांचत्रिमूर्तिस्त्वंतुरीयस्त्वंनमोऽस्तुते ॥
॥१३८॥ नमःसवित्रेजगदेकचक्षुषेजगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ॥
त्रयीमयायत्रिगुणात्मधारिणेविरिंचिनारायणशंकरात्मने ॥१३९॥
यस्योदयेनेहजगत्प्रबुद्ध्यतेप्रवर्ततेचाखिलकर्मसिद्धये ॥ ब्रह्मेंद्रना
रायणरुद्रवंदितःसनःसदायच्छतुमंगलंरविः ॥ १४० ॥ नमोऽस्तु
सूर्यायसहस्ररश्मयेसहस्रशाखान्वितसंभवात्मने ॥ सहस्रयोगोद्भव
भावभागिनेसहस्रसंख्यायुगधारिणेनमः॥१४१॥ यन्मंडलंदीप्तिकरं
विशालंरत्नप्रभंतीव्रमनादिरूपम् ॥ दारिद्र्यदुःखक्षयकारणंचपुना
तुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४२ ॥ यन्मंडलंदेवगणैःसुपूजितंविप्रैः
स्तुतंभावनमुक्तिकोविदम् ॥ तंदेवदेवंप्रणमामिसूर्यंपुनातुमांत
त्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४३ ॥ यन्मंडलंज्ञानघनंत्वगम्यंत्रैलोक्यपूज्यं

त्रिगुणात्मरूपम् ॥ समस्ततेजोमयदिव्यरूपंपुनातुमांतत्सावि
तुर्वरेण्यम् ॥ १४४ ॥ यन्मंडलंगूढमतिप्रबोधंधर्मस्यवृद्धिंकुरुतेज
नानाम् ॥ तत्सर्वपापक्षयकारणंचपुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् ॥
॥ १४५ ॥ यन्मंडलंव्याधिविनाशदक्षंयदृग्यजुःसामसुसंप्रगीत
म् ॥ प्रकाशितंयेनचभूर्भुवःस्वः पुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् ॥
॥ १४६ ॥ यन्मंडलंवेदविदोवदंतिगायंतियच्चारणसिद्धसंघाः ॥
यद्योगिनोयोगजुषांचसंघाःपुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४७ ॥
यन्मंडलंसर्वजनेषुपूजितंज्योतिश्चकुर्यादिहमर्त्यलोके ॥ यत्का
लकालादिमनादिरूपंपुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४८ ॥ यन्मं
डलंविष्णुचतुर्मुखाख्यंयदक्षरंपापहरंजनानाम् ॥ यत्कालकल्पक्ष
यकारणंचपुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४९ ॥ यन्मंडलंविश्व
लंचपुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १५० ॥ यन्मंडलंसर्वगतस्यवि

लंचपुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १५० ॥ यन्मंडलंसर्वगतस्यवि
विष्णोरात्मापरंधामविशुद्धतत्त्वम् ॥ सूक्ष्मांतरैर्योगपथानुगम्यं
पुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १५१ ॥ यन्मंडलंब्रह्मविदोवदंतिगा
यंतियच्चारणसिद्धसंघाः ॥ यन्मंडलंवेदविदःस्मरंतिपुनातुमांतत्स
वितुर्वरेण्यम् ॥ १५२ ॥ यन्मंडलंवेदविदोपगीतंयद्योगिनांयोग
पथानुगम्यम् ॥ तत्सर्ववेदंप्रणमामिसूर्यंपुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम्
॥ १५३ ॥ मंगलाष्टमिदंपुण्यंयःपठेत्सततंनरः ॥ सर्वपापविशु
द्धात्मासूर्यलोकेमहीयते ॥ १५४ ॥ ध्येयःसदासवितृमंडलम
ध्यवर्तीनारायणःसरसिजासनसन्निविष्टः ॥ केयूरवान्मकरकुंडल
वान्किरीटीहारीहिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ॥ १५५ ॥ सशंखचक्रं
रविमंडलेस्थितंकुशेशयाक्रांतमनंतमच्युतम् ॥ भजामिबुद्धयात
पनीयमूर्तिंसुरोत्तमंचित्रविभूषणोज्वलम् ॥ १५६ ॥ एवंब्रह्मादयो

देवाऋषयश्चतपोधनाः ॥ कीर्तयंतिसुश्रेष्ठंदेवंनारायणंविभुम् ॥
॥ १५७ ॥ वेदवेदांगशारीरंदिव्यदीप्तिकरंपरम् ॥ रक्षोघ्नंरक्तवर्णं
चसृष्टिसंहारकारकम् ॥ १५८ ॥ एकचक्रोरथोयस्यादिव्यः
कनकभूषितः ॥ समेभवतुसुप्रीतःपद्महस्तोदिवाकरः ॥ १५९ ॥
आदित्यःप्रथमंनामद्वितीयंतुदिवाकरः ॥ तृतीयंभास्करःप्रोक्तं
चतुर्थंतुप्रभाकरः ॥ १६० ॥ पंचमंतुसहस्रांशुःषष्ठंचैवत्रि
लोचनः ॥ सप्तमंहरिदश्वश्चअष्टमंचविभावसुः ॥ १६१ ॥
नवमंदिनकृत्प्रोक्तंदशमंद्वादशात्मकम् ॥ एकादशंत्रयीमूर्तिर्द्वा-
दशंसूर्यएवच ॥ १६२ ॥ द्वादशादित्यनामानिप्रातःकालेपठेन्नरः ॥
दुःस्वप्ननाशनंचैवसर्वंदुःखंचनश्यति ॥ १६३ ॥ दद्रुकुष्ठहरंचैवदारि
द्र्यंहरतेध्रुवम् ॥ सर्वतीर्थप्रदंचैवसर्वकामप्रवर्द्धनम् ॥ १६४ ॥ यःप

तेमोक्षमेवच ॥ १६५ ॥ अग्निमीळेनमस्तुभ्यमिषेत्वोर्जेस्वरूपिणे॥
अग्नआयाहिवीतस्त्वंनमस्तेज्योतिषांपते ॥ १६६ ॥ शन्नोदेविन
मस्तुभ्यंजगच्चक्षुर्नमोस्तुते॥ पंचमायोपवेदायनमस्तुभ्यंनमोनमः
॥ १६७ ॥ पद्मासनःपद्मकरःपद्मगर्भसमद्युतिः ॥ सप्ताश्वरथसंयु
क्तोद्विभुजःस्यात्सदारविः ॥ १६८ ॥ आदित्यस्यनमस्कारंयेकु
र्वंतिदिनेदिने ॥ जन्मांतरसहस्रेषुदारिद्र्यंनोपजायते ॥ १६९ ॥
उदयगिरिमुपेतंभास्करंपद्महस्तंनिखिलभुवननेत्रंरत्नरत्नोपमेयम् ॥
तिमिरकरिमृगेंद्रंबोधकंपद्मिनीनांसुरवरमभिवंदेसुंदरंविश्ववंद्यम् ॥
इतिश्रीभविष्योत्तरपुराणेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेआदित्यहृदयस्तोत्रं
संपूर्णम् ॥ शुभंभवतु ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथनवग्रहस्तो
त्रप्रारंभः ॥ ॥ जपाकुसुमसंकाशंकाश्यपेयंमहाद्युतिम् ॥ तमोरिं
सर्वपापघ्नंप्रणतोस्मिदिवाकरम् ॥ १ ॥ दधिशंखतुषाराभंक्षीरोदार्ण

वसंभवम् ॥ नमामिशशिनंसोमंशंभोर्मुकुटभूषणम् ॥ २ ॥ धरणी
गर्भसंभूतंविद्युत्कांतिसमप्रभम् ॥ कुमारंशक्तिहस्तंतंमंगलंप्रणमा
म्यहम् ॥ ३ ॥ प्रियंगुकलिकाश्यामंरूपेणाप्रतिमंबुधम् ॥ सौम्यंसौ
म्यगुणोपेतंतंबुधंप्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥ देवानांचऋषीणांचगुरुंकांच
नसन्निभम् ॥ बुद्धिभूतंत्रिलोकेशंतंनमामिबृहस्पतिम् ॥५॥ हिमकुं-
दमृणालाभंदैत्यानांपरमंगुरुम् ॥ सर्वशास्त्रप्रवक्तारंभार्गवंप्रण
माम्यहम् ॥ ६ ॥ नीलांजनसमाभासंरविपुत्रंयमाग्रजम् ॥ छाया
मार्तंडसंभूतंतंनमामिशनैश्चरम् ॥ ७ ॥ अर्धकायंमहावीर्यंचंद्रा
दित्यविमर्दनम् ॥ सिंहिकागर्भसंभूतंतंराहुंप्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥
पलाशपुष्पसंकाशंतारकाग्रहमस्तकम् ॥ रौद्रंरौद्रात्मकंघोरंतंकेतुं
प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥ इतिव्यासमुखोद्गीतंयःपठेत्सुसमाहितः ॥

नृपाणांचभवेद्दुःस्वप्ननाशनम् ॥ ऐश्वर्यमतुलंतेषामारोग्यंपुष्टि

नृपाणांचभवेद्दुःस्वप्ननाशनम् ॥ ऐश्वर्यमतुलंतेषामारोग्यंपुष्टिवर्द्धनम् ॥ ११ ॥ ग्रहनक्षत्रजाःपीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः ॥ ताःसर्वाःप्रशमंयांतिव्यासोब्रूतेनसंशयः ॥ १२ ॥ इतिश्रीवेदव्यासविरचितंआदित्यादिनवग्रहस्तोत्रंसंपूर्णम् ॥ ॥ ॥

इदं पुस्तकं मुंबय्यां भगीरथात्मजेन हरिप्रसादेन
"गुजराती"नाम्नि मुद्रागारे आयसाक्षरैर्मुद्रापितम्
शकाब्दाः १८२०–विक्रमाब्दाः १९५५

श्रीराम ब्रह्मचारी विहाघाट
इति आदित्यहृदयं स०

श्रीगणेशायनमः॥ पांडवउवाच॥ ॥ प्र
ल्हादनारदपराशरपुंडरीकव्यासांबरीषशु
कशौनकभीष्मदाल्भ्यान्॥रुक्मांगदार्जु
नवसिष्ठविभीषणादीन्पुण्यानिमान्परम
भागवतान्स्मरामि॥१॥॥ लोमहर्षणउ
वाच॥ ॥धर्मोविवर्द्धतियुधिष्ठिरकीर्तने
नपापंप्रणश्यतिवृकोदरकीर्त्तनेन॥ शत्रु

विनश्यतिधनंजयकीर्त्तनेनमाद्रीसुतौक
थयतांनभवंतिरोगाः ॥ २ ॥ ब्रह्मोवाच ॥
येमानवाविगतरागपरावरज्ञा नारायणं
सुरगुरुंसततंस्मरंति ॥ ध्यानेनतेनहताकि
ल्बिषचेतनास्तेमातुःपयोधररसंनपुनः
पिबंति ॥ ३ ॥ इंद्रउवाच ॥ नारायणोना
मनरो नराणां प्रसिद्धचोरःकथितःपृथि

व्याम् ॥ अनेकजन्मार्जितपापसंचयंहर
त्यशेषंस्मरतांसदैव ॥ ४ ॥ युधिष्ठिरउवा
च ॥ मेघश्यामंपीतकौशेयवासंश्रीवत्सां
कंकौस्तुभोद्भासितांगम् ॥ पुण्योपेतंपुंड
रीकायताक्षंविष्णुंवंदेसर्वलोकैकनाथम्
॥ ५ ॥ भीमसेनउवाच॥ ॥ जलौघमग्ना
सचराचराधरा विषाणकोट्याखिलवि

श्वमूर्तिना ॥ समुद्धृतायेनवराहरूपिणास
मेस्वयंभूर्भगवान्प्रसीदताम् ॥ ६ ॥ ॥ अ
र्जुनउवाच ॥ ॥ अचिंत्यमव्यक्तमनंतम
व्ययंविभुंप्रभुंभावितविश्वभावनम् ॥ त्रै
लोक्यविस्तारविचारकारकं हरिंप्रपन्नो
स्मिगतिंमहात्मनां ॥ ७ ॥ नकुलउवाच ॥
यदिगमनमधस्तात्कालपाशानुबद्धोय

दिव्यकुलविहीनेजायतेपाक्षिकीटे॥ कृमि
शतमपिगत्वाजायतेचांतरात्माममभव
तुहृदिस्थेकेशवेभक्तिरेका॥ ८ ॥ ॥ सहदे
वउवाच ॥ तस्ययज्ञवराहस्यविष्णोरतु
लतेजसः ॥ प्रणामंयेप्रकुर्वंतितेषामपिन
मोनमः॥ ९॥ ॥ कुंत्युवाच ॥स्वकर्मफल
निर्दिष्टांयांयांयोनिंव्रजाम्यहम् ॥ तस्यां

तस्यांहृषीकेशत्वयिभक्तिर्दृढास्तुमे १०॥
माद्रयुवाच ॥ ॥ कृष्णेरताःकृष्णमनुस्मरं
तिरात्रौचकृष्णंपुनरुत्थिताये ॥ तेभिन्न
देहाःप्रविशंतिकृष्णंहविर्यथामंत्रहुतंहुता
शं ॥ ११ ॥ ॥ द्रुपदउवाच ॥ कीटेषुपक्षि
षुमृगेषुसरीसृपेषु रक्षःपिशाचमनुजेष्व
पियत्रयत्र ॥ जातस्यमेभवतुकेशवत्वत्प्र

सादात्त्वय्येवभक्तिरचलाऽव्यभिचारि
णीच ॥ १२ ॥ ॥ सुभद्रोवाच ॥ ॥ एको
पिकृष्णस्यकृत:प्रणामो दशाश्वमेधाव
भृथेनतुल्य: ॥ दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्म
कृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय ॥ १३ ॥ अभि
मन्युरुवाच ॥ गोविंदगोविंदहरेमुरारेगो
विंदगोविंदमुकुंदकृष्ण ॥ गोविंदगोविंदर

थांगपाणेगोविंदगोविंदनमोनमस्ते १४
धृष्टद्युम्नउवाच ॥ ॥ श्रीरामनारायणवा
सुदेवगोविंदवैकुंठमुकुंदकृष्ण ॥ श्रीकेश
वानंतनृसिंहविष्णोमांत्राहिसंसारभुजंग
दष्टम् ॥ १५ ॥ सात्यकिरुवाच ॥ अप्र
मेयहरेविष्णोकृष्णदामोदराच्युत ॥ गो
विंदानंतसर्वेशवासुदेवनमोस्तुते ॥ १६ ॥

॥उद्धवउवाच ॥वासुदेवंपरित्यज्ययोन्यं
देवमुपासते ॥ तृषितोजान्हवीतीरेकूपंख
नतिदुर्मतिः ॥१७॥ ॥ धौम्यउवाच ॥अ
पांसमीपेशयनासनस्थितौदिवाचरात्रौ
चयथाधिगच्छता ॥ यद्यस्तिकिंचित्सु
कृतंकृतंमयाजनार्दनस्तेनकृतेनतुष्यतु
॥ १८ ॥ ॥संजयउवाच ॥ ॥ आर्तावि

षण्णाःशिथिलाश्चभीताघोरेषुव्याघ्रादि
षुवर्त्तमानाः ॥ संकीर्त्यनारायणशब्दमा
त्रंविमुक्तदुःखाःसुखिनोभवंति ॥ १९ ॥
॥ अक्रूरउवाच ॥ अहंहिनारायणदासदा
सदासानुदासस्यचदासदासः ॥ अस्त्य
न्यईशोजगतोनराणां तस्मादहंचान्यत
रोस्मिलोके ॥ २० ॥ विदुरउवाच ॥ वा

सुदेवस्ययेभक्ताःशांतास्तद्गतमानसाः ॥
तेषांदासस्यदासोहमभूवंजन्मजन्मनि॥
॥ २१ ॥ भीष्मउवाच ॥ विपरीतेषुकाले
षुपरिक्षीणेषुबंधुषु ॥ त्राहिमांकृपयाकृ
ष्णशरणागतवत्सल ॥ २२ ॥ ॥ द्रोणा
चार्यउवाच ॥ येयेहताश्चक्रधरेणराजंस्त्रै
लोक्यनाथेनजनार्दनेन ॥ तेतेनराविष्णु

पां० ६

पुरंप्रयाताःक्रोधोपिदेवस्यवरेणतुल्यः ॥
॥ २३ ॥ कृपाचार्यउवाच ॥ ॥ मज्जन्म
नःफलमिदंमधुकैटभारेमत्प्रार्थनीयमद
नुग्रहएषएव ॥ त्वद्भृत्यभृत्यपरिचारकभृ
त्यभृत्यभृत्यस्य भृत्यइतिमांस्मरलोक
नाथ ॥ २४ ॥ ॥ अश्वत्थामोवाच ॥ ॥
गोविंदकेशवजनार्दनवासुदेवविश्वेशवि

गी० ६

श्वमधुसूदनविश्वनाथ ॥ श्रीपद्मनाभपु
रुषोत्तमपुष्कराक्षनारायणाच्युतनृसिंह
नमोनमस्ते ॥ २५ ॥ ॥ कर्णउवाच ॥
नान्यंवदामिनशृणोमिनचिंतयामि ना
न्यंस्मरामिनभजामिनचाश्रयामि ॥ भ
क्त्यात्वदीयचरणांबुजमादरेणश्रीश्रीनि
वासपुरुषोत्तमदेहिदास्यम् ॥ २६ ॥ धृत

राष्ट्रउवाच ॥ ॥ नमोनमःकारणवामना
यनारायणायामितविक्रमाय ॥ श्रीशा
र्ङ्गचक्राब्जगदाधरायनमोस्तुतस्मैपुरुषो
त्तमाय ॥ २७॥ ॥ गांधार्युवाच ॥ ॥ त्व
मेवमाताचपितात्वमेव त्वमेवबन्धुश्चस
खात्वमेव॥त्वमेवविद्याद्रविणंत्वमेवत्वमे
वसर्वंममदेवदेव ॥२८॥ द्रौपद्युवाच ॥

यज्ञेशाच्युतगोविंदमाधवानन्तकेशव ॥
कृष्णविष्णोहृषीकेशवासुदेवनमोस्तुते
॥ २९ ॥ ॥ जयद्रथउवाच ॥ ॥ नमःकृ
ष्णायदेवायब्रह्मणेनंतमूर्त्तये ॥ योगेश्व
राययोगायत्वामहंशरणंगतः ॥ ३० ॥
॥ विकर्णउवाच ॥ कृष्णायवासुदेवायदे
वकीनंदनायच ॥ नंदगोपकुमारायगोविं

दायनमोनमः ॥ ३१ ॥ सोमदत्तउवाच ॥
नमःपरमकल्याणनमस्तेविश्वभावन ॥
वासुदेवाय शान्ताय यदूनांपतये नमः ॥
॥ ३२ ॥ ॥ विराटउवाच ॥ ॥ नमोब्रह्म
ण्यदेवायगोब्राह्मणहितायच ॥ जगद्धि
तायकृष्णायगोविंदायनमोनमः ॥ ३३ ॥
॥ शल्यउवाच ॥ अतसीपुष्पसंकाशंपी

तवाससमच्युतम् ॥ येनमस्यंतिगोविंदं
नतेषांविद्यतेभयम् ॥ ३४ ॥ ॥ बलभद्र
उवाच ॥ कृष्णकृष्णकृपालुस्त्वमगती
नांगतिर्भव ॥ संसारार्णवमग्नानांप्रसीद
पुरुषोत्तम ॥ ३५ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच॥
कृष्णकृष्णेतिकृष्णेति योमांस्मरतिनि
त्यशः॥ जलंभित्त्वायथापद्मंनरकादुद्धरा

म्यहम् ॥ ३६ ॥ सत्यंब्रवीमिमनुजाःस्व
यमूर्ध्वबाहुर्योमांमुकुन्दनरसिंहजनार्दने
ति ॥ जीवोजपत्यनुदिनंमरणेरणेवापा
षाणकाष्ठसदृशायददाम्यभीष्टम् ३७॥
॥ सूतउवाच॥ तत्रैवगंगायमुनाचवेणी
गोदावरीसिंधुसरस्वतीच ॥ सर्वाणिती
र्थानिवसन्तितत्रयत्राच्युतोदारकथाप्रसं

गः ॥ ३८ ॥ ॥ यमउवाच ॥ ॥ नरके
पच्यमानस्तुयमेनपरिभाषितः ॥ किंत्व
यानार्चितोदेवःकेशवःक्लेशनाशनः ३९॥
॥ नारदउवाच ॥ जन्मांतरसहस्रेणतपो
ध्यानसमाधिभिः ॥ नराणांक्षीणपापा
नांकृष्णेभक्तिःप्रजायते ॥ ४० ॥ ॥ प्रन्हा
दउवाच ॥ नाथयोनिसहस्रेषुयेषुयेषुव्र

जाम्यहम् ॥ तेषुतेष्वचलाभक्तिरच्युता
स्तुसदात्वयि ॥ ४१ ॥ याप्रीतिरविवेका
नांविषयेष्वनपायिनी ॥ त्वामनुस्मरतः
सामेहृदयान्नापसर्पतु॥४२॥ विश्वामित्र
उवाच ॥ किंतस्यदानैः किंतीर्थैः किंतपो
भिः किमध्वरैः ॥ योनित्यंध्यायतेदेवंनरा
णांमनसिस्थितम् ४३॥जमदग्निरुवाच॥

नित्योत्सवस्सदातेषांनित्याश्रीर्नित्यमंग
लम् ॥ येषांहृदिस्थोभगवान्मंगलायतनं
हरिः ॥ ४४ ॥ ॥ भरद्वाजउवाच ॥ ॥ ला
भस्तेषांजयस्तेषांकुतस्तेषांपराजयः ॥
येषामिंदीवरश्यामोहृदयस्थोजनार्दनः ॥
॥४५॥ ॥ गौतमउवाच ॥ गोकोटिदानंग्र
हणेषुकाशीप्रयागगंगायुतकल्पवासः ॥

यज्ञायुतंमेरुसुवर्णदानंगोविंदनाम्नानस
मंनतुल्यम् ॥ ४६ ॥ ॥ अत्रिरुवाच ॥
गोविंदेतिसदास्नानंगोविंदेतिसदाजपः ॥
गोविंदेतिसदाध्यानंसदागोविंदकीर्त्तनम्
॥ ४७ ॥ अक्षरंहिपरंब्रह्मगोविंदेत्यक्षर
त्रयम् ॥ तस्मादुच्चरितंयेनब्रह्मभूयाय
कल्पते ॥ ४८ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अ

च्युतःकल्पवृक्षोसावनंतःकामधेनवः ॥
चिंतामणिश्चगोविंदोहरिनामविचिंतये
त् ॥ ४१ ॥ ॥ हरिरुवाच ॥ ॥ जयतिज
यतिदेवोदेवकीनंदनोयंजयतिजयतिकृ
ष्णोवृष्णिवंशप्रदीपः ॥ जयतिजयति
मेघश्यामलःकोमलांगोजयतिजयतिपृ
थ्वीभारनाशोमुकुंदः ॥ ५० ॥ ॥ पिप्प

लायनउवाच ॥ श्रीमन्नृसिंहविभवेगरुडध्वजायतापत्रयोपशमनायभवौषधाय ॥ कृष्णायवृश्चिकजलाग्निभुजंगरोगलेशव्यपायहरयेगुरवेनमस्ते ॥ ५१ ॥ आविर्होत्रउवाच ॥ कृष्णत्वदीयपदपंकजपंजरांतेअद्यैवमेविशतुमानसराजहंसः ॥ प्राणप्रयाणसमयेकफवातपित्तैःकंठावरो

घनविधौस्मरणंकुतस्ते ॥ ५२॥ ॥ विदुरउवाच ॥ हरेर्नामैवनामैवनामैवममजीवनम् ॥ कलौनास्त्येवनास्त्येवनास्त्येवगतिरन्यथा ॥ ५३ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ कृष्णेतिमंगलंनामयस्यवाचिप्रवर्त्तते ॥ भस्मीभवंतितस्याशुमहापातककोटयः ॥ ५४ ॥ ॥ अरुंधत्युवाच ॥ ॥ कृष्णा

यवासुदेवायहरयेपरमात्मने ॥ प्रणतक्ले
शनाशायगोविंदायनमोनमः ॥ ५५ ॥
॥ कश्यपउवाच ॥ ॥ कृष्णानुस्मरणादेव
पापसंघातपंजरः ॥ शतधाभेदमाप्नोति
गिरिर्वज्रहतोयथा ॥ ५६ ॥ दुर्योधनउवा
च ॥ जानामिधर्मंनचमेप्रवृत्तिर्जानाम्य
धर्मंनचमेनिवृत्तिः ॥ केनापिदेवेनहृदि

स्थितेनयथानियुक्तोस्मितथाकरोमि ॥
॥ ५७ ॥ येनस्वगुणदोषेणक्षम्यतांमधु
सूदनः ॥ अहमेवमहंहंतुंममदोषोनविद्य
ते ॥ ५८ ॥ भृगुरुवाच ॥ ॥ नामैवतवगो
विन्दनामत्वत्तःशताधिकम् ॥ ददात्युच्चार
णान्मुक्तिंविनाप्यष्टांगयोगतः ॥ ५९ ॥
॥ लोमहर्षणउवाच ॥ ॥ नमामिनाराय

णपादपंकजंकरोमिनारायणपूजनंसदा॥
वदामिनारायणनामनिर्मलंस्मरामिना
रायणतत्त्वमव्ययम् ॥ ६० ॥ ॥ शौनक
उवाच ॥ ॥ स्मृतेसकलकल्याणभाजनं
यत्रजायते॥ पुरुषंतमजंनित्यंव्रजामिश
रणंहरिम् ॥ ६१ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ ना
रायणेतिमंत्रोस्तिवागस्तिवशवर्तिनी ॥

तथापिनरकेघोरेपतंतीत्येतदद्भुतम् ६२ ॥
॥ दाल्भ्यउवाच ॥ ॥ किंतस्यबहुभिर्मंत्रै
र्भक्तिर्यस्यजनार्दने ॥ नमोनारायणाये
तिमंत्रःसर्वार्थसाधकः ॥ ६३ ॥ ॥ वैशं
पायनउवाच ॥ ॥ यत्रयोगेश्वरःकृष्णो
यत्रपार्थोधनुर्धरः ॥ तत्रश्रीर्विजयोभूति
र्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ॥ ६४ ॥ अंगिराउवाच

हरिर्हरतिपापानिदुष्टचित्तैरपिस्मृत: ॥अ
निच्छयापिसंस्पृष्टोदहत्येवहिपावक: ॥
॥ ६५ ॥ ॥ पराशरउवाच ॥ सकृदुच्चरि
तंयेनहरिरित्यक्षरद्वयम् ॥ बद्ध:परिकर
स्तेनमोक्षायगमनंप्रति ॥ ६६ ॥ ॥ पौल
स्त्यउवाच ॥ हेजिह्वेरससारज्ञेसर्वदाम
धुरप्रिये ॥ नारायणाख्यपीयूषंपिबजिह्वे

निरंतरम् ॥ ६७ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ स
त्यंसत्यंपुनःसत्यंभुजमुत्थाप्यचोच्यते॥
नवेदाच्चपरंशास्त्रंनदेवःकेशवात्परः ६८ ॥
॥ धन्वंतरिरुवाच ॥ अच्युतानंतगोविंद
नामोच्चारणभेषजात् ॥ नश्यंतिसकला
रोगाः सत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ ६९ ॥ मा
र्कंडेयउवाच ॥ ॥ साहानिस्तन्महच्छि

द्वेसाचांधजडमूढता ॥ यन्मुहूर्त्तंक्षणंवा
पिवासुदेवंनचिंतयेत् ॥ ७० ॥ ॥ अग
स्त्यउवाच ॥ ॥ निमिषंनिमिषार्द्धंवाप्रा
णिनांविष्णुचिंतनम् ॥ क्रतुकोटिसहस्रा
णांध्यानमेकंविशिष्यते ॥ ७१ ॥ मनसा
कर्मणावाचायेस्मरंतिजनार्दनम् ॥ तत्र
तत्रकुरुक्षेत्रंप्रयागोनैमिषंवनम् ॥ ७२ ॥

॥श्रीशुकउवाच ॥ आलोड्यसर्वशास्त्रा
णिविचार्यैवंपुन:पुन: ॥ इदमेकंसुनिष्प
न्नंध्येयोनारायण:सदा ॥ ७३ ॥ श्रीमहा
देवउवाच ॥ शरीरंचनवाच्छिद्रंव्याधिग्र
स्तंकलेवरम् ॥ औषधंजान्हवीतोयंवैद्यो
नारायणोहरि: ॥ ७४ ॥ शौनकउवाच॥
भोजनाच्छादनेचिंतांवृथाकुर्वन्तिवैष्ण

वाः ॥ योसौविश्वंभरोदेवः सभक्तान्कि
मुपेक्षते ॥ ७५ ॥ एवंब्रह्मादयोदेवाऋष
यश्चतपोधनाः॥ कीर्तयंतिसुरश्रेष्ठंदेवंना
रायणंविभुम्॥७६॥ सनत्कुमारउवाच ॥
यस्यहस्तेगदाचक्रंगरुडोयस्यवाहनम् ॥
शंखःकरतलेयस्य समेविष्णुःप्रसीदतु ॥
॥ ७७ ॥ इदंपवित्रमायुष्यंपुण्यंपापप्रणा

शनम् ॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय वैष्णवं स्तोत्र
मुत्तमम् ॥ ७८ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो वि
ष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥ धर्मार्थकाममो
क्षार्थं पांडवैः परिकीर्त्तितम् ॥ ७९ ॥ आ
काशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति ८०
इति श्रीपांडवकृतप्रपन्नगीता संपूर्णा ॥ श्री

कृष्णार्पणमस्तु ॥ शुभंभवतु ॥ श्रीमतेरा
मानुजायनमः ॥ ॥ अष्टोत्तरशतस्थाने
ष्वाविर्भूतंजगत्पतिं ॥ नमामिजगतामी
शंनारायणमनन्यधीः ॥ १ ॥ श्रीवैकुंठेवा
सुदेवमामोदेकर्षणाऽह्वयं ॥ प्रद्युम्नंचप्रमो
दाख्येसंमोदेचानिरुद्धकं ॥ २ ॥ सत्यलो
केतथाविष्णुपद्माक्षंसूर्यमंडले ॥ क्षीरा

व्धौशेषशयनंश्वेतद्वीपेतुतारकम्॥ ३। ना
रायणंबदर्याख्येनैमिशेहरिमव्ययम्॥शा
लग्रामंहरिक्षेत्रेअयोध्यायांरघूत्तमं ॥४॥
मथुरायांबालकृष्णंमायायांमधुसूदनं ॥
काश्यांतुभोगशयनमवंत्यामवनीपतिं ॥
॥ ५ ॥ द्वारवत्यांयादवेंद्रंव्रजेगोपीजनप्रि
यं ॥ वृंदावनेनंदसूनुंगोविंदंकालियन्हदे॥

॥ ६॥ गोवर्धनेगोपवेषंभवघ्नंभक्तवत्सलं
॥रोमंथपर्वतेशौरिंहरिद्वारेजगत्पतिं॥७॥
प्रयागेमाधवंचैवगयायांतुगदाधरं॥गंगा
सागरगेविष्णुंश्चित्रकूटेतुराघवं ॥ ८ ॥ नं
दिग्रामेराक्षसघ्नंप्रभासेविश्वरूपिणं॥श्री
कूर्मेकूर्ममचलंनीलाद्रौपुरुषोत्तमं॥ ९ ॥
सिंहाचलेमहासिंहंगदिनंतुलसीवने ॥ घृ

तशैलेपापहरंश्वेताद्रौसिंहरूपिणं॥ १०।
योगानंदंधर्मपुर्यांकाकुलेत्वांध्रनायकं ॥
अहोबलेगारुडाद्रौहिरण्यासुरमर्दनं ११
विठ्ठलंपांडुरङ्गेतुवेंकटाद्रौरमासखं॥ नारा
यणंयादवाद्रौनृसिंहंघटिकाचले १२॥ व
रदंवारणागिरौकांच्यांकमललोचनं॥ य
थोक्तकारिणंचैवपरमेशपुराश्रयं १३ पां

वि० डवानांतथादूतंत्रिविक्रममथोन्नत ॥ का स्था०

२० मासिकयांनृसिंहंचतथाष्टभुजसंज्ञकम्॥

॥ १४ ॥ मेघाकारंशुभाकारंशेषाकारंतु

शोभनं। अंतराशितिकंठस्यकामकोटचां

शुभप्रदं॥ १५ ॥ कालमेघंखगारूढंकोटि

सूर्यसमप्रभं॥ दिव्यंदीपप्रकाशंचदेवाना २०

मधिपंमुने ॥ प्रवालवर्णदीपाभंकांच्याम

ष्टादशास्थिता: ॥ १६ ॥श्रीगृध्रसरसस्ती
रे भांतंविजयराघवं।वीक्षारण्येमहापुण्ये
शयानंवीरराघवं॥ १७ ॥तोताद्रौतुंगशय
नंगजार्तिघ्नंगजस्थले॥महाबलिंबलिपुरे
भक्तिसारेजगत्पतिं॥ १८॥अहींद्रेदेवदेवे
शंगोपपुर्यांतुगोपतिं ॥महावराहंश्रीमुष्णे
महींद्रेपद्मलोचनं ॥ १९॥ श्रीरंगेतुजग

न्नाथंश्रीधामेजानकीप्रियं ॥ सारक्षेत्रेसा
रनाथंखंडनेहरचापहं ॥ २० ॥ श्रीनिवा
सस्थलेपूर्णंसुवर्णस्वर्णमंदिरे ॥ व्याघ्रपु
र्यांमहाविष्णुंभक्तिस्थानेतुभक्तिदं ॥ २१
श्वेतन्हदेशांतमूर्तिमग्निपुर्यांसुरप्रियं ॥ भ
र्गाख्यंभार्गवस्थानेवैकुंठाख्येतुमाधवं ॥
॥ २२ ॥ पुरुषोत्तमेभक्तसखंचक्रतीर्थेसु

दर्शनं ॥ कुंभकोणेचक्रपाणिंभूतस्थानेतु
शार्ङ्गिणं ॥ २३ ॥कपिस्थलेगजार्तिघ्नंगो
विंदंचित्रकूटके ॥ अनुत्तमंचोत्तमायां
श्वेताद्रौपद्मलोचनं ॥ २४ ॥पार्थस्थलेप
रब्रह्मकृष्णकोट्यांमधुद्विषं ॥ नंदपुर्यांम
हानंदंवृद्धपुर्यांवृषाश्रयं ॥ २५ ॥ असंगं
संगमग्रामेशरण्येशरणंमहत् ॥ दक्षिणद्वा

रकायांतुगोपालंजगतांपतिं॥२६ ॥ सिं
हक्षेत्रेमहासिंहंमल्लारिंमणिमंडपे ॥ निबि
डेनिबिडाकारंधानुष्केजगदीश्वरं॥२७।
मोहूरेकालमेघंतुमधुरायांतुसुंदरं ॥ वृष
भाद्रौमहापुण्येपरमस्वामिसंज्ञकं॥२८॥
श्रीमद्वरगुणेनाथंकुरुकायांरमासखं॥गो
ष्ठीपुरेगोष्ठपतिंशयानंदर्भसंस्तरे॥ २९ ॥

धन्वीमंगलकेशौरिं बलाढ्यं भ्रमरस्थले।
कुरंगेतु तथापूर्णं कृष्णमेकं वटस्थले॥ ३०
अच्युतं क्षुद्रनद्यांतु पद्मनाभमनंतके ॥ ए
तानि विष्णोः स्थानानि पूजितानि महा
त्मभिः ॥ ३१ ॥ अधिष्ठितानि देवेश तत्रा
सीनं च माधवं ॥ यः स्मरेत्सततं भक्त्या चे
तसानान्यगामिना ॥ ३२ ॥ सविधूया

तिसंसारबंधंयातिहरेःपदं ॥ अष्टोत्तरशतं
विष्णोःस्थानानिपठतिस्वयम् ॥ ३३ ॥
अधीताः सकलावेदाः कृताश्चविविधाम
खाः॥संपादितातथामुक्तिःपरमानंददायि
नी ॥ ३४॥ अवगाढानितीर्थानिज्ञातःस
भगवान्हरिः॥आद्यमेतत्स्वयंव्यक्तंविमा
नंरंगसंज्ञकं ३५॥श्रीमुष्णंवेंकटाद्रिंचशा

लग्रामंचनैमिशं ॥ तोताद्रिंपुष्करंचैवनर
नारायणाश्रमं॥ ३६ ।अष्टौमेमूर्तयःसंति
स्वयंव्यक्तामहीतले ॥ ३७ ॥ ॥ ❋ ॥
॥श्रीमतेरामानुजायनमः ॥ वात्सल्याद
भयप्रदानसमयादार्तार्तिनिर्वापणादौदा
र्यादघशोषणादगणितश्रेयःपदप्रापण
त् ॥ सेव्यः श्रीपतिरेकएवजगतामेतेभव

न्साक्षिणः प्रल्हादश्च विभीषणश्च करिराट्
पांचाल्यहल्याध्रुवः १॥ प्रल्हादास्ति यदी
श्वरो वद हरे सर्वत्र मे दर्शय स्तंभे चैवमिति
ब्रुवंतमसुरं तत्राविरासीद्धरिः॥ वक्षस्तस्य
विदारयन्निजनखैर्वात्सल्यमापादयन्ना
र्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे ग
तिः॥ २ ॥ श्रीरामोत्र विभीषणोयमनघो

रक्षोभयादागतः सुग्रीवानयपालयैनमधु
नापौलस्त्यमेवागतं ॥ इत्युक्तोभयमस्य
सर्वंविदितंयोराघवोदत्तवानार्तत्राणपरा
यणःसभगवान्नारायणोमेगतिः ॥ ३ ॥न
क्रग्रस्तपदसमुद्धृतकरंब्रह्मादिदेवासुराःपा
लयंतामितिदीनवाक्यकरिणंदेवेष्वशक्ते
षुयः॥माभैषीरितियश्चनक्रहननेचक्रायु

ध:श्रीधरोत्वार्त्तत्राणपरायण:सभगवान्ना
रायणोमेगति:४।भो:कृष्णाच्युतभो:कृ
पालयहरेभो:पांडवानांसखेक्कासिक्कासि
सुयोधनादपहृतांभोरक्षमामातुरां॥ इत्यु
क्तोक्षयवस्त्रसंभृततनुंयोपालयद्द्रौपदीमा
र्तत्राणपरायण:सभगवान्नारायणोमेग
ति:॥५॥ यत्पादाब्जनखोदकंत्रिजगतां

पापौघविध्वंसनंयन्नामामृतपूरकंचापिव
तांसंसारसंतारकं ॥पाषाणोऽपियदंघ्रिपद्म
रजसाशापान्मुनेर्मोचितोत्यार्तत्राणप०
॥ ६ ॥ पित्राभ्रातरमुत्तमासनगतंचौत्ता
नपादिंध्रुवो दृष्ट्वातत्सममारुरुक्षुरधृतामा
त्रावमानंगतः ॥ यंगत्वाशरणंयदापतप
साहेमाद्रिसिंहासनमार्तत्राण० ॥७॥आ

तार्विषण्णाःशिथिलाश्चभीताघोरेषुच
व्याधिषुवर्तमानाः ॥ संकीर्त्यनारायण
शब्दमात्रंविमुक्तदुःखाःसुखिनोभवंति ॥
॥८॥ इतिश्रीकूरेशस्वामिविरचितंनारा
यणाष्टकंसंपूर्णं ॥ ॥ ॥
श्रीमतेरामानुजायनमः ॥ ॥ रक्तांभोरु
हदर्पभंजनमहासौंदर्यनेत्रद्वयं मुक्ताहार